RNI No UPHIN/2015/65982

₹10

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

वर्ष : 12 अंक : 09 01-15 मई 2026

कार्पोरेट जिहाद

सम्पादकीय

नेपाल सीमा पर सतर्कता जरूरी

नेपाल के बीरगंज में मुस्लिम समुदाय की तरफ से इज्तिमा जैसे मजहबी आयोजन हमारे लिये भी चिन्ता का विषय हैं। इनमें बहुत बड़ी संख्या में पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ-साथ अन्य मुस्लिम देशों के कट्टर मौलानाओं का महाजुटान होता है। यह आयोजन मुख्य रूप से तब्लीगी जमात से जुड़े होते हैं। कहने को तो इसमें कुरान की शिक्षाओं, भाईचारे और शान्ति के लिये दुआ की जाती है लेकिन वास्तविक कार्य मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ाने और जिहाद करने की रणनीति तैयार करना होता है। इसमें घुसपैठ और धर्मान्तरण जैसे उपायों पर चर्चा होती है। हमारे लिये उत्तर प्रदेश और बिहार से लगी सीमा पर जनसांख्यिकीय परिवर्तन तो चिन्ता का विषय है ही, नेपाल में बढ़ती मुसलमानों की संख्या भी कम बड़ी समस्या नहीं बनने वाली है क्योंकि नेपाल के साथ हमारी सीमा लगभग खुली है और वीजा-पासपोर्ट के नियम नहीं हैं। ऐसे में नेपाली नागरिकों के रूप में कितने जिहादी और आतंकी हमारी सीमा में आ जायेंगे, इसका अनुमान कठिन नहीं है इसीलिये भारत को अपने पड़ोसी देश के साथ लगी सीमा पर सुरक्षा और कड़ी करने की आवश्यकता है।

नेपाल में 2021 की जनगणना के अनुसार, मुस्लिम जनसंख्या में तीव्र वृद्धि दर्ज की गयी है। वहाँ के केन्द्रीय जनसांख्यिकी ब्यूरो की रिपोर्ट कहती है कि पिछले एक दशक में नेपाल में मुसलमानों की संख्या तेजी से बढ़ी है। वर्तमान में नेपाल में लगभग 15 लाख लोग इस्लाम को मानने वाले हैं, जो देश की कुल जनसंख्या का 5.09 प्रतिशत है। 2026 के आंकड़ों के अनुसार, नेपाल में मुस्लिम आबादी में लगभग 0.69 प्रतिशत की और वृद्धि हुई है। मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि के अध्ययन बताते हैं कि पाँच प्रतिशत से अधिक होने के बाद हर देश में यह बढ़ोतरी और तेजी से होती है जो आगे चलकर गम्भीर समस्या का रूप ले लेती है। दूसरी ओर नेपाल में 2011 से 2021 के बीच ईसाइयों की भी जनसंख्या में वृद्धि हुई है, जबकि हिन्दुओं और बौद्धों की जनसंख्या में गिरावट आयी है। हमारे लिये सोचनीय स्थिति इसलिये भी है नेपाल में मुसलमानों की अधिकतर जनसंख्या तरायी क्षेत्र में निवास करती है, जो भारत से सटा हुआ है।

नेपाल में ऐसे मजहबी जमावड़ों और कट्टरपंथी मौलानाओं के जुटने को लेकर हाल के समय में काफी चर्चा और सुरक्षा चिन्ताएँ रही हैं। 2026 की आरम्भिक रिपोर्टों के अनुसार, ऐसे आयोजन नेपाल की सुरक्षा एजेंसियों की निगरानी में रहे हैं। दरअसल, उस समय स्थानीय जिला प्रशासन को जानकारी मिली थी कि कुछ कट्टरपंथी मुस्लिम धार्मिक नेता और मौलाना जिन पर भारत समेत कई देशों में प्रतिबन्ध लगा था वो कार्यक्रम में शामिल होने वाले थे। यह कार्यक्रम नेपाल के सुनसरी जिले के दुहाबी और इटहरी इलाके में होना था। कार्यक्रम की भव्यता का अन्दाजा इस बात से लगा सकता कि तब 80 एकड़ जमीन पर टेन्ट लगाया गया था। यहाँ 50 हजार से अधिक लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। ऐसे में इतने बड़े जमावड़े से नेपाल के साथ साथ भारतीय सीमा पर भी धार्मिक भावनाएँ भड़कने की आशंका थी। इस पर सुनसरी की तत्कालीन जिलाधिकारी ने नेपाल के गृह मंत्रालय को चिट्ठी भेजी थी जिसमें इस जमावड़े से पैदा होने वाली चुनौतियों का जिक्र किया गया था और सलाह माँगी गयी थी। गम्भीरता से लेते हुए मंत्रालय ने कार्यक्रम को रद्द करने का आदेश दिया था। नेपाल के सुनसरी जिले के दुहाबी और इटहरी जैसे क्षेत्रों में अक्सर बड़े पैमाने पर मुस्लिम धार्मिक जमावड़े आयोजित होते हैं। नेपाल के मधेश-तराई क्षेत्रों में मुस्लिमों की भीड़ द्वारा हिन्दुओं पर हमलों की कई घटनाएँ होती रही हैं। भारतीय सीमा जैसे उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर, बहराइच और बिहार के मोतिहारी के पास स्थित नेपाल के इलाकों में ऐसी मजहबी बड़ी भीड़ जुटने पर हमारी चिन्ताएँ और बढ़ जाती हैं।।

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 अंक : 09

RNI. No. UPHIN/2015/65982

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

सम्पादक

शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक रॉय

मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय

संस्कृति भवन

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नग्र लखनऊ दूरभाष +91-6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।

अनुक्रम

कार्पोरेट जिहाद 04

श्रीराम का कूटनीतिज्ञ स्वरूप 06

राष्ट्रीयनिष्ठ सैन्य अधिकारी करिअप्पा 09

भगवान बुद्ध के उपदेश में राष्ट्रीयता का भाव 10

चापेकर बन्धु : परिस्थितियाँ, प्रतिरोध और... 11

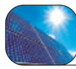
सौर ऊर्जा में भारत 13

'अपने घर वापस आ जायें' 15

गाँव की प्रतिभाओं को मिली पहचान, खेत... 16

भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय... 17

सुभाषित

अन्नदानं परं दानं विद्यादानमतः परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्तिः यावज्जीवं च विद्यया ॥

अन्न और विद्या का दान भी परम दान है किन्तु दान में अन्न प्राप्त करने वाले को कुछ क्षणों के लिये ही तृप्ति प्राप्त होती है, जबकि दान में विद्या प्राप्त करने वाला (अपनी विद्या से आजीविका कमा कर) जीवनपर्यन्त तृप्ति प्राप्त करता है।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

Scan & Subscribe

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या : 02510210002360
आई एफएससी : UCBA0000251
यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता	₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता	₹ 1000
आजीवन सदस्यता	₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

कार्पोरेट जिहाद

कई कम्पनियों में चल रहा धर्मान्तरण का खेल

अगर आपको लगता है कि आपके बगल में बैठा अब्दुल सेक्युलर है। सभी धर्म को समान रूप से देखा है। उसके सोशल मीडिया पोस्ट भी यही कहते हैं, तो यह आँखों का धोखा हो सकता है। हाल ही में नासिक टीसीएस की घटना ने झकझोड़कर रख दिया। इसके बाद अन्य कम्पनियों के भी हिन्दुओं के प्रति भेदभाव की परत खुलने लगी जिनमे, लेंसकार्ट, एयर इण्डिया और एमक्योर फार्मास्यूटिकल्स कम्पनी के इण्डिया बिजनेस की निदेशक नमिता थापर के विरुद्ध बयान और ड्रेस कोड सामने आये। यहाँ बिजनेस नहीं बल्कि धर्म परिवर्तन का खेल चल रहा था। जहाँ लड़कियों को इस आधार पर भर्ती किया जा सकता था कि उनके साथ यौन शोषण कर धर्म-परिवर्तन किया जाये।

नासिक महाराष्ट्र स्थित टाटा कंसलटेंसी का मामला सामने आने पर एक महिला ने अपने सीनियर मुस्लिम पर संगठित रूप से जबरन नमाज पढ़ने, धर्मान्तरण और यौन शोषण, नॉनवेज खिलाने और शादी का झाँसा देकर रेप का आरोप लगाया।

पीड़िता ने बताया कि दानिश शेख उसका क्लासमेट है। दोनों एक ही कॉलेज में पढ़ायी कर रहे थे। वहीं पर उससे मुलाकात हुई थी। दानिश सीनियर था। वह पासआउट होने के बाद टीसीएस जॉइन किया और हमें भी कम्पनी में जॉब करने का ऑफर दिया। इसके बाद बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ता है। पीड़िता ने बताया कि एक मुलाकात के दौरान दानिश ने उसे जबरदस्ती खींचकर किस किया और शादी करने का दबाव बनाने लगा। इस दौरान पीड़िता ने नौकरी पाने के लिये स्पष्ट जवाब नहीं दिया। बात चलती रही और उसकी नौकरी पक्की हो जाती है। नौकरी लगने के बाद दानिश शेख के साथ में दो अन्य लोगों तौसीफ अख्तर और निदा खान से भी मुलाकात होती है। इन लोगों से बातचीत के दौरान बात धर्म की ओर मुड़ा और पीड़िता पर यह तीनों मिलकर धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने लगे।

पीड़िता ने आगे बताया कि अगस्त, 2024 दानिश उसे झूठ बोलकर एक होटल ले गया जहाँ उसने जबरदस्ती शारीरिक सम्बन्ध बनाये। इसकी जानकारी जब तौसीफ को हुई तो उसने इस बात का फायदा उठाया और पीड़िता को ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। उसने कहा कि अगर वह उसकी सभी बातें नहीं मानेगी तो वह यह सारी बातें उसके परिवार से बता देगा।

पीड़िता के अनुसार तौसीफ ने कई बार उसके साथ छेड़छाड़ और मारपीट की। दोनों आरोपी बार-बार धर्म-परिवर्तन का दबाव बनाते थे। ऐसा न करने पर धमकी दी जाती थी कि उसके प्राइवेट पिक्चर्स सोशल मीडिया पर वायरल कर दिये जायेंगे।

यह कहानी चल ही रही थी कि एक महिला ने फरवरी, 2026 में पीड़िता को कॉल करके खुद को दानिश की बीवी बतायी। पीड़िता को इसके बाद पता चला कि दानिश पहले से ही शादीशुदा है। उसके दो बच्चे भी हैं। जब उसने दानिश से इस बारे में पूछा तो उसने इस बात से इनकार कर दिया। पीड़िता ने बताया कि दानिश ने अपनी शादी छुपा कर कई बार उससे शारीरिक सम्बन्ध बनाये।

कलमा पढ़ने के लिये किया मजबूर

एक पुरुष कर्मचारी ने भी आरोप लगाया है कि 2022 में कम्पनी ज्वाइन की थी उस समय टीम लीडर तौसीफ अख्तार थे। वो अक्सर टीम दानिस का काम मुझे दे दिया करते थे, क्योंकि वो मेरे टीम लीडर थे इस लिये मैं बिना झिझक के सारे काम कर दिया करता था। मैं धार्मिक व्यक्ति हूँ। रुद्राक्ष पहनता हूँ, कलावा बाँधता हूँ। इस बात को लेकर अक्सर तौसीफ इसके बारे में अभद्र टिप्पणी करते थे। उनका कहना था कि सिर्फ अल्ला ही सब कुछ है। हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में टिप्पणी करते थे। कहते थे कि सिर्फ अल्लाह ही है। हिन्दू देवी-देवताओं की मान्यताएँ गलत है। इसके बारे में अपमानजनक बाते करते थे। कई बार होटल ले गये जहाँ जबरदस्ती नॉनवेज खिलाने के लिये दबाव बनाये। न खाने पर देवी-देवताओं के बारे में अपमानजनक बाते कीं। अपने धर्म की प्रशंसा करते रहे। धर्म परिवर्तन के दबाव जैसा था वो। दूसरे कर्मचारियों के साथ भी यही करता था। 2023 रमजान ईद के मौके पर तौसीफ अपने घर ले गया। मेरी इच्छा के बगैर मुझे टोपी पहनवायी, नवाज पढ़ने के लिये मजबूर किया गया। मेरी फोटो ली गयी, जो किसी ग्रुप में शेयर की गयी। मानसिक कष्ट यह जानते हुए भी की मैं सद्गुरू की बैठक में जाता हूँ, शाकाहारी जीवन शैली अपनाता हूँ, तौसीफ ने कार्य स्थल पर कई बार कलमा पढ़वाया। तौसिफ और दानिस देर रात एक होटल ले गये जबरदस्ती मांसाहार खिलाने का दबाव बनाया। न खाने पर बुरा परिणाम भुगतने की धमकी दी। मार्च 2023 में पिता जी को पैरालिसिस का अटैक पड़ा। परिवार कठिनाइयों से गुजर रहा था। शाहरुख, दानिस, तौसिफ और रजा मेनन ने यह कहते हुए कनवर्जन की सलाह दी कि इससे स्थिति बेहतर हो जायेगी। जब मैने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया तो उन्होंने मेरी निगेटिव रिपोर्ट हेड ऑफिस भेज दी। कार्यस्थल पर आये दिन प्रताड़ित किया गया। विरोध करने पर धर्म

के बारे में अनुचित टिप्पणी की गयी। उनका व्यवहार मेरे प्रति शत्रुतापूर्ण हो गया।

मामले में 7 कर्मचारियों (तौसीफ अख्तर, दानिश शेख, रजा मेमन, शाहरुख कुरैशी, शफी शेख, आसिफ आफताब अंसारी और निदा खान) के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गयी है। इनमें से निदा खान फरार है जबकि अन्य कर्मचारी गिरफ्तार हो चुके हैं। ऑपरेशन मैनेजर अश्विनी चानना भी रिमाण्ड पर लेकर जेल भेजा जा चुका है। पूरे मामले में टीसीएस के वरिष्ठ प्रबन्धन की भूमिका भी संदिग्ध रही है। सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद आरोपी कर्मचारियों को सस्पेंड कर दिया गया है। पहले टीसीएस कम्पनी ने कहा था कि उनकी शुरुआती आन्तरिक जाँच में आधिकारिक रिपोर्टिंग सिस्टम (POSH) के जरिये ऐसी कोई शिकायत नहीं मिली थी।

आतंकी कनेक्शन

निदा खान जैश-ए-मोहम्मद की आतंकी और दिल्ली बम धमाके के पीछे मुख्य भूमिका निभाने वाली डॉ. शाहीन सईद से भी ये कई बार मिल चुकी है। जहाँ अधिक से अधिक लोगों को कंवर्जन का खेल चल रहा था। निदा पर आरोप है कि वह विशेष रूप से महिला कर्मियों को निशाना बनाती थी। उन्हें हिन्दू धर्म के खिलाफ भड़काती और उन पर इस्लामिक रीति रिवाजों को अपनाने का दबाव बनाती थी। वह पीड़ितों को कलमा पढ़ने के लिये मजबूर करती थी। महाराष्ट्र पुलिस ने इस मामले की जाँच के लिये स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम का गठन किया है। इस मामले में एक एनजीओ का नाम भी सामने आया है, जिस पर गम्भीर आरोप हैं। इन्टेलिजेंस एजेंसियों ने एनजीओ के फण्डिंग और लिंक की जाँच शुरू कर दी है। इस मामले में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी कम्पनी के वरिष्ठ प्रबन्धन और पुलिस से जवाब माँगा है।

लेंसकार्ट में धर्मांतरण का खेल

टीसीएस कम्पनी में लव-जिहाद और धर्मांतरण खुलासे के बाद मुम्बई के अन्धेरी वेस्ट से लेंसकार्ट के शोरूम से बड़ा विवाद सामने आया है। लेंसकार्ट में काम करने वाले एक कर्मचारी ने बड़ा खुलासा करते हुए बताया कि कम्पनी के प्रशिक्षणा के दौरान उनके तिलक लगाने और कलावा पहनने पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। इतना ही नहीं विवाहित महिलाओं को मंगल सूत्र पहनने की अनुमति नहीं है। इस बीच लेंसकार्ट कम्पनी की कर्मचारी ग्रूमिंग नीति का एक दस्तावेज इंटरनेट मीडिया में वायरल हो गया। जिससे कम्पनी की उस नीति का प्रमाण भी मिल गया, जो हिन्दू कर्मचारियों को अपने सांस्कृतिक प्रतीकों को धारण करने से वंचित कर रही थी। इतना ही नहीं यहाँ टोपी और बुर्के पर कोई आपत्ति नहीं थी। ये कम्पनी के दोहरे रवैये को साफ दर्शाता है।

हिन्दुओं के साथ भेदभाव क्यों?

बड़ा सवाल उठता है कि आखिर पीयूष बंसल की कम्पनी ने हिन्दू विश्वसों को ही दबाने के लिये इस तरह की नियमावली क्यों बनायेंगे, क्योंकि उन्हें तो सिर्फ बिजनेस से मतलब है लेकिन इसके पीछे बड़ी वजह है। अगर इनके इन्वेस्टर में देखे तो सबसे बड़ा इन्वेस्टर एडीआईए यानी अबू धाबी निवेश प्राधिकरण का 10-12 प्रतिशत का टेक है। अब जो फण्ड देगा वो अपनी पॉलिसी तो लागू करवायेगा ही। क्या भारत में इन्वेस्टरों की कमी पड़ गयी थी कि आबूधाबी गवर्नमेन्ट से इन्वेस्टमेंट करवाना पड़ा। अभी आप लेंसकार्ट का जो सामान खरीदते हैं उसका 10-12 प्रतिशत आबूधाबी गवर्नमेंट को जा रहा है। इससे साफ है हमारे ही पैसे से हमारे आस्था को चोट पहुँचाया जा रहा है।

एयर इण्डिया में बिन्दी सिन्दूर कलावा पर रोक

एयर इण्डिया में भी नौकरी कर रहे हिन्दुओं को की भावनाओं को दबाने का प्रयास किया गया। हाल ही में सोशल मीडिया पर वायर हो रहे एयर इण्डिया के ड्रेस पॉलिसी में साफ तौर पर बिन्दी, सिन्दूर, रक्षा और कलावा जैसे हिन्दू धर्म के चिन्हों पर रोक लगायी गयी। भारत जहाँ हिन्दू

बहुसंख्यक हैं वहाँ कम्पनियों द्वारा हिन्दू मान्यताओं को दबाने का प्रयास किया जा रहा है।

सोचने की बात है कि अगर हिन्दू अल्पसंख्यक हो गये तो क्या होगा? हालाँकि एयर इण्डिया ने सफायी देते हुए बताया कि वायरल हो रहा दस्तावेज पुराना था। वर्तमान में एयर इण्डिया में बिन्दी, कलावा, सिन्दूर पर कोई रोक नहीं है। लेकिन इसके बाद भी एयर इण्डिया के मंशा पर सवाल खड़े हो रहे हैं। मान्यताओं को लेकर इस तरह के नियम बनाने के पीछे क्या वजह हो सकती है।

नमिता थापर पर भी सवाल

'शार्क टैंक इण्डिया' की जज और एमक्योर

फार्मास्यूटिकल्स कम्पनी के इण्डिया बिज़नेस की निदेशक नमिता थापर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से हो रहा है, जिसमें उन्होंने साड़ी पहनने और संस्कार को लेकर टिप्पणी की थी। जिसमें उन्होंने कहा कि लोग सोचते हैं कि साड़ी पहनकर पूजा करने वाले संस्कारी होते हैं। यह सच नहीं है। मैं इसे नहीं मानती। इसके बाद एक दूसरा वीडियो वायरल हो रहा जिसमें उन्होंने अपने एक मुस्लिम दोस्त के साथ नमाज पढ़कर आने के बाद उसके फायदे गिनाती नजर आ रही हैं। जब कम्पनी की हेड को ही हिन्दुओं की पहनावे और पूजा पाठ से नफरत है। उन्हें नमाज में लाभ नजर आ रहा है, तो कम्पनी के अन्दर के माहौल के बारे में आप समझ सकते हैं। ●

श्रीराम का कूटनीतिज्ञ स्वरूप

प्रायः ये जनप्रवृत्ति रही है कि श्रीराम को सरल, करुणावत्सल और मर्यादा रक्षक व्यक्तित्व के रूप में देखा गया जो सदैव सामाजिक और राजनैतिक मर्यादाओं की रक्षा करते हैं जबकि श्रीकृष्ण को एक चतुर, कूटनीतिज्ञ और लीलाधर के रूप में देखा गया जो धर्मस्थापना के लिये साध्य साधन औचित्य की किसी मर्यादा को मानने के लिये तैयार नहीं हैं। इसी तुलना के चलते भावुक भक्तों द्वारा चौदह और सोलह कलाओं जैसी अवधारणायें दी गयीं जबकि वास्तविकता यह है कि श्रीराम भी उतने ही घोर राजमर्मज्ञ थे जितने श्रीकृष्ण। अन्तर केवल छवि का है। श्रीराम की सरल छवि के नीचे उनका धुर राजनीतिज्ञ रूप आच्छादित हो गया है जबकि श्रीकृष्ण की चपल छवि के कारण उनका कूटनीतिज्ञ रूप जनमानस में स्थापित हो गया है।

कूटनीति के चार मूल सिद्धान्त

एक वास्तविकता यह भी है कि श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों की कूटनीतिक और रणनैतिक कार्यशैली एक जैसी ही थी जिसके चार प्रमुख सिद्धान्त थे- अपने पक्ष का सुदृढ़ संगठन व उनमें नैतिक बल उत्पन्न करना, युद्ध पूर्व विरोधी पक्ष में अपने समर्थक उत्पन्न करना, सैन्य प्रयोग के लिये उचित समय का इन्तजार करना और कम से कम बलप्रयोग द्वारा अधिकतम परिणाम लेना।

विश्वामित्र के सिद्धाश्रम की रक्षा

प्रारम्भ से ही श्रीराम के अभियानों में उपरोक्त सिद्धान्तों का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। उनके जीवन का प्रथम अभियान था विश्वामित्र के सिद्धाश्रम के नजदीक स्थित रावण के सैनिक स्कंधावार के विरुद्ध जिसका नेतृत्व कर रही थी यक्षिणी ताड़का व राक्षस सुन्द के जाल में फंसकर उससे उत्पन्न पुत्र मारीच और सुबाहु जो उस क्षेत्र के स्वार्थी और शक्तिशाली आर्यों को तेजी से रक्षधर्म में धर्मान्तरित कर रहे थे। नरमांस भक्षण, स्त्रीअपहरण व बलात्कार, लूट और शोषण के विरुद्ध विश्वामित्र के नेतृत्व में जनाक्रोश पहले से एकत्रित था और आवश्यकता थी केवल न्याय के लिये अधिकृत नेतृत्व की जो राम ने उन्हें प्रदान किया।

जन संगठन की नीति

इसके बाद राम ने शृंगवेरपुर के निषादों से स्वतंत्रता व समानता के सम्बन्ध स्थापित किये और यह विशाल क्षेत्र में फैली स्वाभिमानी जाति सदैव के लिये राम के प्रति श्रद्धावनत हो गयी।

अपने पिता दशरथ द्वारा दक्षिण में शंबर के नेतृत्व में असुरों के विरुद्ध देव जाति के सैन्य अभियान की असफलता से राम ने वन्य जाति बहुल क्षेत्रों में राजकीय सैन्य अभियान की निरर्थकता को समझ लिया था। इसीलिये चित्रकूट और दण्डकारण्य में राम ने वन्य जातियों यथा शबर, भील, कोल आदि के बीच में उन्हीं जैसा जीवन जीते हुए इन जातियों का संगठन किया, उनमें जीवन सुधार व सैन्यप्रशिक्षण द्वारा नैतिकता व

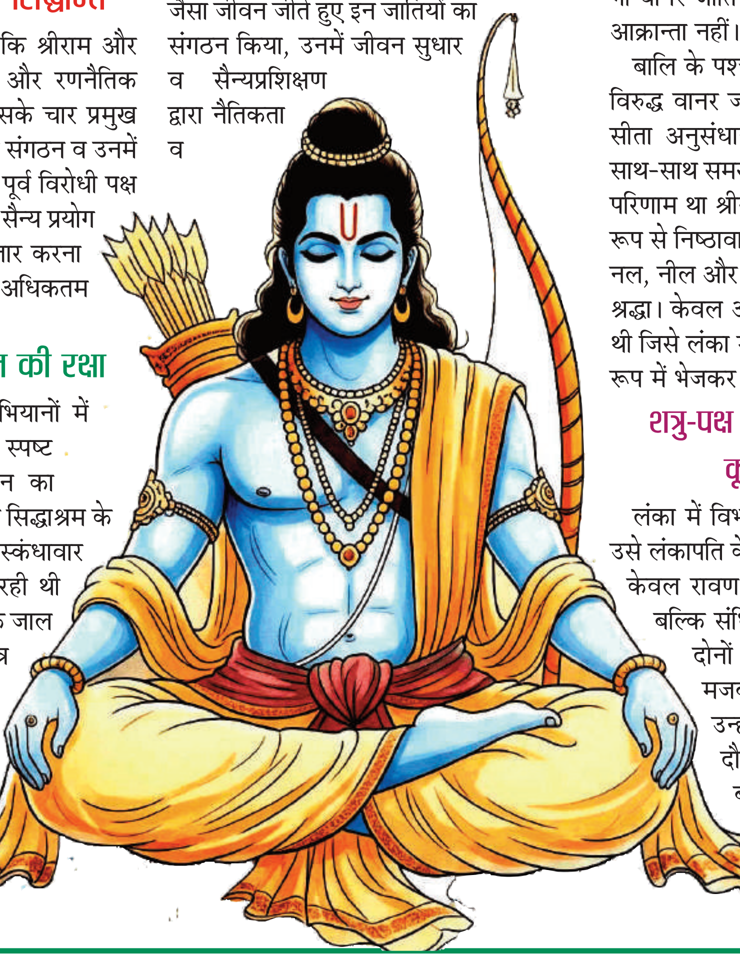

आत्मविश्वास का संचार किया।

शत्रु को अनुकूल भूगोल में परास्त करना

शूर्पणखा प्रसंग से अपने समर्थकों में अपने चरित्र के प्रति अगाध विश्वास उत्पन्न किया। सम्यक रणनीति द्वारा खर-दूषण को अपने अनुकूल भूगोल में युद्ध करने के लिये उकसाया और दण्डकवन में रावण की सैन्य उपस्थिति को समूल नष्ट कर दिया।

सुग्रीव, बालि और जन-समर्थन

वानरों के सन्दर्भ में भी यही हुआ। उन्होंने दुर्बल परन्तु पीड़ित सुग्रीव का पक्ष लिया जिससे उन्हें स्वतः ही सुग्रीव के प्रति सहानुभूति रखने वाली अधिसंख्य वानर प्रजा का नैतिक समर्थन प्राप्त हो गया जिसके कारण द्वंद्वयुद्ध के नियमों के विपरीत हस्तक्षेप कर बालि का वध करने पर भी वानर जाति ने उन्हें अपना मुक्तिदाता माना, आक्रान्ता नहीं।

बालि के पश्चात राम ने राक्षसों के शोषण के विरुद्ध वानर जाति के आक्रोश को उभारा और सीता अनुसंधान के समय का सदुपयोग कर साथ-साथ समस्त जानकारियाँ जुटाते रहे जिसका परिणाम था श्रीराम के नेतृत्व के प्रति असाधारण रूप से निष्ठावान सेना तथा हनुमान, जाम्बवान, नल, नील और सुहोत्र जैसे यूथपतियों की अगाध श्रद्धा। केवल अंगद की निष्ठा पर उन्हें आशंका थी जिसे लंका में रावण के दरबार में उसे दूत के रूप में भेजकर जाँच लिया गया।

शत्रु-पक्ष में समर्थक और चरम कूटनीतिक चातुर्य

लंका में विभीषण के विद्रोह व पलायन तथा उसे लंकापति के रूप में मान्यता देकर उन्होंने न केवल रावण की कमजोरियों को जान लिया बल्कि संधिप्रस्ताव भेजकर अपने व रावण दोनों पक्षों में अपने नैतिक बल को मजबूत कर लिया और इसके बाद ही उन्होंने युद्ध प्रारम्भ किया। युद्ध के दौरान भी उन्होंने अपनी सतर्कता बनाये रखी और विभीषण को सुरक्षा के नैतिक उत्तरदायित्व का हवाला देकर सदैव केन्द्र में

अपने नजदीक रखा। क्या पता कब भाई के प्रति मोह जाग जाये? और जब विभीषण की सहायता से मेघनाद का वध हो गया तो उन्होंने विभीषण को रावण से टकराने की छूट दे दी क्योंकि अब रावण द्वारा विभीषण को पुनः अपनाने की सारी सम्भावनायें नष्ट हो चुकी थीं।

सुग्रीव के राज्याभिषेक के साथ-साथ अंगद के युवराज्याभिषेक व अंगद के दूतकर्म के पश्चात विभीषण के प्रसंग में श्रीराम के चरम कूटनीतिक चातुर्य के दर्शन होते हैं और यह तीन प्रसंग ही उनके राजनैतिक व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिये काफी हैं।

अयोध्या वापसी और राज्याभिषेक पश्चात की राजनीतिक सतर्कता

वनवास से लौटने के पश्चात हनुमान को अयोध्या व भरत की मनःस्थिति को भाँपने के लिये अग्रिम दूत के रूप में भेजना उनकी राजोचित सतर्कता का उदाहरण है। राज्याभिषेक के पश्चात सीतात्याग के उपरान्त भी भारतवर्ष के राजनैतिक संगठन का उनका अभियान जारी रहा।

लंका में विभीषण और दक्षिण भारत में सुग्रीव दोनों उनकी मैत्रीपूर्ण अधीनता स्वीकार करते ही थे और दोनों शक्तियों में विजित और विजेता सम्बन्ध का विवाद कभी भी उत्पन्न न हो सके और दोनों के मध्य सन्तुलन बना रहे, इसके लिये विभीषण के गुप्त अनुरोध पर उन्होंने अपने ही बनाये रामसेतु को मध्य से इतना भंग करवा दिया कि वानर सेनायें कभी भी लंका पर और लंकानिवासी राक्षस, जो अब आर्य संस्कृति को स्वीकार कर चुके थे, दक्षिण भारत पर आक्रमण न कर सकें।

लवणासुर का दमन व मथुरा की स्थापना

राज्याभिषेक के पश्चात राम के समक्ष सबसे पहली और नजदीकी मुसीबत थी यमुना पार मधुवन में लवणासुर के रूप में और पूर्व में प्राग्ज्योतिष में बाणासुर के रूप में स्थापित प्राचीन असुरों की पीठें। मधुवन की लवणासुर की पीठ अयोध्या के लिये विशेष रूप से सिर दर्द थी। इस क्षेत्र के असुरों ने न केवल यदुओं को सौराष्ट्र की ओर धकेल दिया था बल्कि सूर्यवंश के ही प्रतापी चक्रवर्ती नरेश मांधाता की हत्या तक युद्ध में कर दी थी।

प्राचीन असुरों की यह पीठ इतनी शक्तिशाली थी कि रावण तक लवणासुर से कन्नी काट गया था। परन्तु भृगुओं की एक शाखा के कुलपति च्यवन पर आक्रमण कर असुरों ने भीषण गलती कर दी। 'देखो और इंतजार करो' की नीति के कारण श्रीराम सदैव उचित समय का इंतजार करते थे। अब असुरों द्वारा आक्रामक पहल करने से उनकी अपनी प्रजा और सेना का नैतिक बल प्राप्त हो गया और महर्षि च्यवन के नेतृत्व में भृगुओं के रूप में एक जबरदस्त सहायक मिल गया, तो उन्होंने शत्रुघ्न के नेतृत्व में सेनायें तुरन्त भेज दीं।

तत्कालीन लवणासुर मारा गया, असुर सेनाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया गया और श्रीराम ने मधुवन के नाम पर 'मधुरा' को सैन्य केन्द्र बनाकर वहाँ नियुक्त किया शत्रुघ्नो और यही

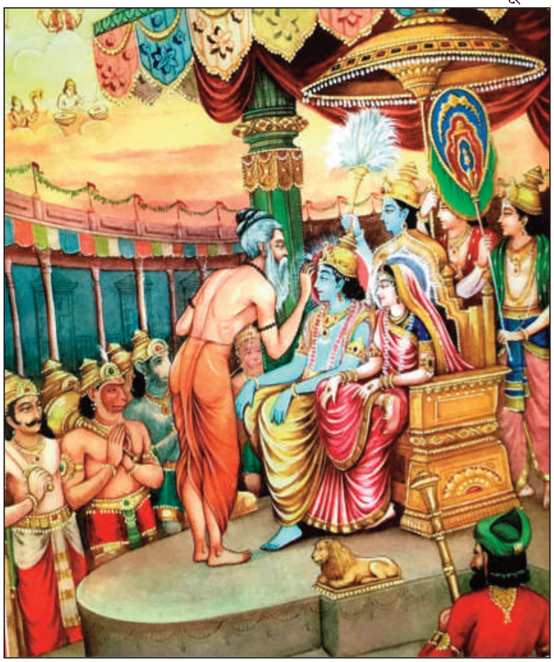

मधुरा आगे जाकर कहलाई मथुरा। शत्रुघ्न ने श्रीराम की आज्ञा पर दक्षिण की ओर बढ़कर विदिशा पर भी अधिकार कर लिया और वहाँ नियुक्त किया अपने पुत्र शत्रुघाती को।

भाइयों में एकता व राजनीतिक विवेक

उन्होंने लक्ष्मण की राजसूय यज्ञ करने की सलाह के विरुद्ध भरत के मत के कारण भाइयों में मतभेद को टालने के लिये राजसूय यज्ञ के अनुष्ठान के विचार को तज कर अपने पूर्वज रघु की भाँति पूरे भारत के पुनः राजनैतिक एकीकरण और 'चक्रवर्ती' उपाधि धारण करने का विचार तो छोड़ दिया परन्तु राजनैतिक स्थिरता के लिये सम्पूर्ण भारत को एक दृढ़ संगठित रूप देने की कोशिश अवश्य की।

अश्वमेध और रुद्रों से संधि

अश्वमेध के दौरान संधि संरक्षित राज्य के पक्ष में सहायता को आये महारुद्र शिव से एक संक्षिप्त युद्ध और संधि के पश्चात उत्तर की दिशा सुरक्षित हो गयी जिससे अयोध्या साम्राज्य रुद्रों के अधीन कश्मीर में बसे 'यक्ष', 'नाग' और 'पिशाच' जातियों की अराजकता से सुरक्षित हो गया। यक्षराज कुबेर यों भी श्रीराम के प्रति अत्यन्त श्रद्धा रखते ही थे।

तक्षशिला व पुष्कलावती की स्थापना

सर्वाधिक समस्या थी उत्तर पश्चिम में और उसके मूल में थे 'गंधर्व'। उन्होंने पूरे पश्चिमोत्तर क्षेत्र में आतंक मचा रखा था और यहाँ तक कि उन्होंने आनव नरेश और भरत के मामा युधाजित की हत्या कर दी। अवसर की तलाश में बैठे श्रीराम ने तुरन्त भरत और उनके पुत्रों तक्ष व पुष्कल के सेनापतित्व में एक विशाल सेना बाह्लीक प्रदेश में भेज दी जिनका स्वागत मुक्तिदायिनी सेना के रूप में आनवों ने किया। गन्धर्वों को वापस हिमालय व पामीर की ओर भागना पड़ा।

भरत ने आनवों और द्रुह्युओं की सहायता से सुदूर पश्चिम में सबसे अग्रिम सैन्य चौकी के रूप में अपने ज्येष्ठ पुत्र पुष्कल के नाम पर पुष्कलावती और उसके पीछे सिन्धु के पूर्वी तट पर तक्ष के नाम पर तक्षशिला की स्थापना की। सम्भवतः वे स्थानीय गणक्षत्रियों में समाहित हो गये परन्तु उनके नाम पर बसे ये सैन्यकेन्द्र आगे चलकर वैभवशाली नगरों के रूप में विकसित हुए।

लाहौर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कालान्तर में सिन्धु के नीचे रावी के तट पर राम ने अपने कनिष्ठ पुत्र लव के प्रभार में लवपुर बसाया जो मद्रों व कठों के कारण विशेष विस्तृत न हो सका लेकिन वह एक छोटी बस्ती या गाँव के रूप में किसी तरह बना रहा और 9वीं शताब्दी में दुर्ग रूप में लोहकोट और नगरीकृत रूप में 'लवपुर' या लाहौर के रूप में प्रसिद्ध हुआ, जहाँ किसी काल में इसके संस्थापक लव की स्मृति में बनाया गया 'लव मन्दिर' जीर्ण-शीर्ण दशा में आज भी स्थित है।

कुशावती का कुश को प्रभार

उधर दण्डकवन प्राचीनकाल से इक्ष्वाकुओं की एक शाखा के पूर्वज राजा दण्ड के अधिकार में था परन्तु किसी भृगु पुरोहित की पुत्री के साथ दण्ड द्वारा बलात्कार के कारण आर्यों में फूट पड़ गयी जिसका लाभ उठाकर राक्षसों ने इक्ष्वाकुओं को वहाँ से खदेड़ दिया था। स्वयं श्रीराम की माँ कोशल्या दक्षिण कोशल की ही राजकुमारी थीं, इसलिये वह क्षेत्र श्रीराम की ननिहाल भी था।

खर-दूषण के नेतृत्व वाले राक्षस स्कंधावार के विध्वंस के पश्चात ही वहाँ शक्ति-शून्यता पैदा हो चुकी थी, इसलिये उन्होंने वहाँ भी सेनायें भेज दीं और वहाँ पहले से बसे इक्ष्वाकुओं की मदद से दक्षिण कोशल में कुशावती नामक सैन्यकेन्द्र बनाया गया और कालान्तर में उसका प्रभारी कुश को बनाया। कुशावती का दक्षिण कोशल अर्थात छत्तीसगढ़ में होना अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

लक्ष्मण की संतानों द्वारा पंजाब की रक्षा

अब पश्चिमोत्तर से दक्षिण में कुशावती तक एक सशक्त प्रतिरक्षा पंक्ति तैयार हो चुकी थी परन्तु मथुरा और तक्षशिला के बीच में एक बड़ी दरार थी। उसे भरने के लिये उन्होंने चुना अपने सर्वाधिक विश्वासपात्र अनुज लक्ष्मण की सन्तानों अंगद और चित्रकेतु को, जो पहले ही अयोध्या के उत्तर में अंगदीयपुरी और पूर्व में मल्लजाति के क्षेत्र में कारूपथ नामक नगर के प्रभारी थे।

चित्रकेतु मल्लों में इस कदर लोकप्रिय हो चुके थे कि उनका दूसरा नाम 'मल्ल' ही लोकप्रिय हो गया। कारूपथ की स्थापना सम्भवतः पूर्व में असम की ओर से बाणासुर पीठ के किसी सम्भावित अभियान को रोकने और कोशल के मित्र राज्य काशी, अंग व बंग को सहायता प्रदान करने के लिये की गयी।

श्रीराम ने लवपुर और मधुरा के बीच पंजाब में भी अंगदीयपुरी और कारुपथ के नाम से दो और सैन्य केन्द्रों की स्थापना की। अंगदीयपुरी का अस्तित्व अधिक नहीं चल सका लेकिन चित्रकेतु के साथ गये उनके निष्ठावान 'मल्ल' जनों ने वहाँ अपने पैर जमा लिये और कहलाये मालव। कालान्तर में ये रावी और चेनाब के उपरले काठे में बस गये। निचले काठे में बसे आर्यजन अपनी बस्ती की भौगोलिक स्थिति के कारण कहलाये क्षुद्रक अर्थात 'निचले'।

साम्राज्य का राजनैतिक संगठन

अब उत्तर-पश्चिम दिशा एक प्रतिरक्षा रेखा द्वारा सुरक्षित थी जिसका एक बिन्दु पुष्कलावती था और दूसरा बिन्दु था दक्षिण कोशल में कुशावती में। केन्द्र में अयोध्या चारों ओर से लक्ष्मणपुरी (लखनऊ), अंगदीयपुरी, कारूपथ, मथुरा और शृंगवेरपुर द्वारा सुरक्षित थी। इस प्रकार श्रीराम ने अयोध्या साम्राज्य को दोहरी सुरक्षापंक्ति से घेर दिया। साम्राज्य के रूप में भारत का राजनैतिक संगठन पूरा कर उन्होंने इस राष्ट्र को एक बार फिर एकीकृत कर राजनैतिक स्थिरता की नींव डाली।

एक आदर्श प्रशासन व्यवस्था

स्वयं के प्रभार वाली सुदृढ़ गुप्तचर व्यवस्था, शत्रुघ्न के सेनापतित्व में विशाल शक्तिशाली सेना व लक्ष्मण के प्रभार में उदार परन्तु सचेत निगरानी वाले आर्थिक तंत्र के आधार पर उन्होंने उस प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की जिसे इतिहास में एक ऐसे मानक के रूप में देखा गया जो अब तक रामराज्य के रूप में यूटोपिया बना हुआ है, और जिसे केवल गुप्त सम्राट ही कुछ हद तक प्राप्त कर पाये। ●

कूर्म अवतार की कथा

विष्णु पुराण कथानुसार एक बार महर्षि दुर्वासा ब्रह्माण्ड भ्रमण पर निकले थे। उसी समय उनके मार्ग मे एक सघन वन पड़ा जहाँ एक स्त्री अत्यधिक सुन्दर, सुगन्धित, सुसज्जित पुष्पों की माला लिये हुए थी। महर्षि को देखकर उसने वह माला उन्हें समर्पित कर दी। ऋषि दुर्वासा उससे काफी प्रसन्न हुए। उसी समय देवराज इन्द्र वहाँ से जा रहे थे तो महर्षि ने वह माला उन्हें भेंट कर दी, इन्द्र ने वह माला ऐरावत को दे दी और ऐरावत ने उसको जमीन पर डाल कर पैरों से कुचल दिया। जिसको देखकर महर्षि क्रोधित हो गये और देवराज को शाप दे दिया कि श्रीहीन (धन सम्पदा और शक्ति) हो जाओ। जिसके कुछ समय पश्चात देवता धीरे-धीरे श्रीहीन और दुर्बल हो गये और दैत्यों ने उन्हें पराजित कर दिया। तब देवराज इन्द्र के साथ सभी देवता ब्रह्मा जी के पास पहुँचे और उनसे उपाय पूछा तो ब्रह्मा जी सभी देवताओं को लेकर भगवान विष्णु के पास गये और सारी समस्या विस्तारपूर्वक बतायी।

श्रीहरि ने उन्हें दैत्यों की सहायता से समुद्रमन्थन के लिये कहा जिसमें से अमृत निकलेगा और देवता उसको पीकर अमर हो जायेंगे। समुद्र मन्थन के लिये मथानी मन्द्राचल पर्वत और रस्सी के लिये वासूकी नाग से आग्रह किया गया और वो सहर्ष तैयार हो गये। वासूकी के मुख की तरफ दैत्य और पूँछ की तरफ देवता लगे और मन्द्राचल पर्वत द्वारा समुद्र मथना प्रारम्भ किया गया। मन्थन के समय मन्द्राचल पर्वत समुद्र में नीच जाने लगा। देवताओं के विनय करने पर भगवान विष्णु ने कूर्म (कछुआ) रूप में मन्दराचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया। जिससे समुद्र मन्थन का कार्य सम्पूर्ण हुआ। समुद्र मन्थन से हलाहल विष, अमृत, रत्न, कामधेनु, कल्पवृक्ष और लक्ष्मी जी सहित बहुत सी अमूल्य वस्तुएँ प्राप्त हुयी।

कूर्म कछुआ अर्थात जो समान रूप से जल और थल दोनों ही परिस्थितियों में रह सकता है। आज की वैज्ञानिक सोच इसे उभयचर कहती है।

डार्विन के सिद्धान्त में भी पहले जीव की उत्पत्ति जल में हुई और उसके विकास के अगले क्रम में जीव जल और थल दोनों पर रहने में सक्षम हुआ। हमारा वैदिक धर्म भी यही कहता है कि ईश्वर ने पहले मत्स्य अवतार लिया फिर कूर्म अवतार लिया जो आज के वैज्ञानिक सिद्धान्त की कसौटी पर सत्य को स्थापित करता है। जो हजारों वर्षों से हमारे धर्मग्रन्थ कहते आ रहे हैं। वैज्ञानिक आज उसे स्थापित कर रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि डार्विन के 'विकास सिद्धान्त' में और हमारे ईश्वर के अवतारों में काफी समानता है पर इनकी एक-दूसरे से कभी भी तुलना नहीं करनी चाहिये। ●

राष्ट्रनिष्ठ सैन्य अधिकारी करिअप्पा

जनरल कोडण्डेरा मडप्पा करिअप्पा एक महान भारतीय सैन्य अधिकारी और राजनयिक थे। वे ऐसे राष्ट्रीय नायक थे, जिन्होंने भारतीय सेना को उपनिवेशवाद से स्वतंत्र भारत के सैन्य ढाँचे में बदलने में अहम भूमिका निभायी। उन्होंने हमारी सेना को एक सशक्त और प्रभावशाली संस्थान के रूप में स्थापित किया। उनकी उपलब्धियाँ भारत के रक्षा क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। वह भारत के पहले सेनाध्यक्ष थे। 1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में, उन्होंने पश्चिमी मोर्चे पर भारतीय सेना का नेतृत्व किया। 1949 में उन्हें भारत का सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया। सरकार ने उनकी असाधारण सेवाओं के लिये सैन्य क्षेत्र का सर्वोच्च पद फील्ड मार्शल प्रदान किया।

गौरवशाली सैन्य जीवन

करिअप्पा का जन्म 28 जनवरी, 1899 को कर्नाटक में किसान परिवार में हुआ। उनके पिता राजस्व विभाग में कार्यरत थे। छह भाई-बहनों में करिअप्पा दूसरे नम्बर पर थे। उन्हें परिवार और मित्रों के बीच चिम्मा के नाम से जाना जाता था। उनका सैन्य जीवन लगभग तीन दशकों तक चला, जिसका आरम्भ प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश भारतीय सेना से हुआ। उनकी पहली नियुक्ति कर्नाटक इन्फैंट्री में अस्थायी प्रथम लेफ्टिनेंट के रूप में हुई, बाद में राजपूत बटालियन के कमाण्डर बने। यह उपलब्धि हासिल करने वाले वे पहले भारतीय थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान करिअप्पा ने ईराक, ईरान, सीरिया और बर्मा में विभिन्न सैन्य अभियानों का हिस्सा बनकर महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1942 में वह भारतीय सेना के पहले भारतीय बटालियन कमाण्डर बने। स्वतंत्रता के बाद, उन्होंने डिप्टी चीफ ऑफ जनरल स्टाफ के रूप में कार्य किया और कश्मीर में प्रमुख रणनीतिक संचालन का नेतृत्व किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद करिअप्पा को 1945 में ब्रिगेडियर के रूप में पदोन्नति मिली, जो इस

रैंक को पाने वाले पहले भारतीय बने। 1949 में भारतीय सेना के सेनाध्यक्ष बनने के बाद उन्होंने सेना के आधुनिकीकरण में विशेष योगदान दिया।

विरासत और योगदान

करियप्पा की विरासत उनकी सैन्य उपलब्धियों से कहीं आगे तक जाती है। उन्होंने पूर्व सैनिकों के कल्याण के लिये भारतीय पूर्व सैनिक संघ की स्थापना 1964 में की और पुनर्वास प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। राष्ट्रीय सुरक्षा और सैनिकों के कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता जीवन भर बनी रही। 1953 में सेवानिवृत्ति के बाद, करिअप्पा 1956 तक ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में भारत के उच्चायुक्त रहे। उनका निधन 15 मई, 1993 को हुआ। उनके योगदान के लिये भारत सरकार ने 28 अप्रैल, 1986 को उन्हें फील्ड मार्शल का मानद रैंक प्रदान किया। करिअप्पा का जीवन अनुशासन, नेतृत्व और देशभक्ति के आदर्श मूल्यों को प्रेरित करता है। ●

आरएसएस के प्रशंसक थे करिअप्पा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और करिअप्पा एक दूसरे के शुभचिन्तक और प्रशंसक रहे। 1959 में जनरल करिअप्पा मंगलोर की संघ शाखा के कार्यक्रम में गये थे। वहाँ उन्होंने कहा कि संघ कार्य मुझे अपने हृदय से प्रिय कार्यों में से है। अगर कोई मुस्लिम इस्लाम की प्रशंसा कर सकता है, तो संघ के हिन्दुत्व का अभिमान रखने में गलत क्या है? प्रिय युवा मित्रो, आप किसी भी गलत प्रचार से हतोत्साहित न होते हुए कार्य करो। डॉ. हेडगेवार ने आपके सामने एक स्वार्थरहित कार्य का पवित्र आदर्श रखा है। उसी पर आगे बढ़ो। भारत को आज आप जैसे सेवाभावी कार्यकर्ताओं की ही आवश्यकता है। संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी के जनरल करिअप्पा के साथ स्नेहपूर्ण सम्बन्ध थे। 21 नवम्बर, 1956 को वे मैसूर में मिले थे और उस समय भाषा के प्रश्न पर श्री गुरुजी के विचार सुनकर वे प्रभावित हुए थे। 13 वर्ष बाद, 1969 में श्री गुरुजी के निमंत्रण पर करिअप्पा उडुपी के विश्व हिन्दू परिषद के सम्मेलन में उपस्थित रहे। यह वही सम्मेलन था, जहाँ सभी सन्तों ने अस्पृश्यता को नकारा था। एक अन्य प्रसंग में, जब वे संघ का घोष का कार्यक्रम देखने गये, तो उन्हें बताया गया कि एक विशिष्ट समय पर नियत स्थान पर घोष का संचलन आयेगा। वह कार्यक्रम देखकर उन्होंने इसकी प्रशंसा की थी।

डरते थे नेहरू!

करिअप्पा के सुपुत्र एयर मार्शल केसी करिअप्पा ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि जवाहर लाल नेहरू को इस बात का डर था कि मेरे पिता उनका तख्तापलट कर सकते हैं इसीलिए नेहरू ने 1953 में मेरे पिता को ऑस्ट्रेलिया का हाई कमिश्नर बना के भेज दिया था। ऐसा माना जाता है कि नेहरू स्वतंत्रता के उपरान्त कुछ समय तक किसी अंग्रेज को ही भारत की सेना का प्रमुख बनाये रखना चाहते थे लेकिन सेना के अधिकारियों के दवाब में करिअप्पा को सेनाध्यक्ष बनाना पड़ा था। 1947 में जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया तो नेहरू की ही गलत नीतियों से हमारा एक हिस्सा पाकिस्तान को चला गया। उस समय करिअप्पा की चलती तो पाक अधिकृत कश्मीर भी आज हमारा होता।

भगवान बुद्ध के उपदेश में राष्ट्रीयता का भाव

दीर्घकाल तक जब धर्मानुष्ठान करने वालों के अन्तःकरण में काम के उद्भव हो जाने से विवेक विज्ञान का क्षय और अधर्म की वृद्धि होने लगती है। ऐसी स्थिति मे अकारण दुःख हरण इच्छा रखने वाले परम कारुणिक भगवान विष्णु प्रजा की रक्षा करने के लिये ब्राह्मणों के ब्राह्मणत्व की रक्षा के लिये अवतरित होते है। ऐसे ही शुद्ध-बुद्ध ब्रह्मस्वरूप भगवान बुद्ध का आविर्भाव वैशाख पूर्णिमा को कीकट क्षेत्र मे हुआ था। सम्प्रति लोकमान्यता और अन्य साक्ष्यों के अनुसार उनका जन्म नेपाल के लुम्बिनि मे माना जाता आ रहा है परन्तु श्रीमद्भागवत्पुराण के टीकाकार श्रीधरस्वामी कीकट क्षेत्र को वर्तमान बिहार के गया जी को मानते है।

ततः कलौ सम्प्रवृत्ते सम्मोहाय सुरद्विषाम्।
बुद्धो नाम्नाञ्जनसुतः कीकटेषु भविष्यति।।
(श्री भा १.३.२४)

बुद्ध का स्वरूप

भगवान बुद्ध के स्वरूप का वर्णन अग्नि पुराण और महाभारत में भी मिलता है, जिनके आधार पर उनकी प्रतिमाओं का स्वरूप प्रचलित हुआ। अग्नि पुराण में उनका वर्णन इस प्रकार है-

शान्तात्मा लम्बकर्णश्च गौराङ्गश्चाम्बरावृतः।
ऊर्ध्वपद्मस्थितो बुद्धो वरदाभयदायकः॥

अर्थात् वे शान्त स्वभाव वाले, लम्बे कानों वाले, गौर वर्ण, वस्त्र धारण किये हुए, खिले हुए कमल पर विराजमान तथा वरदान और अभय देने वाले हैं। इसी प्रकार महाभारत में उल्लेख मिलता है-

काषायवस्त्रसंवीतो मुण्डितः शुक्लदन्तवान्।
शुद्धोदनसुतो बुद्धो मोहयिष्यामि मानवान्।।

अर्थात् वे काषाय वस्त्र धारण करेंगे, मुण्डित (मुण्डित मस्तक) होंगे, उज्ज्वल दाँतों वाले होंगे और राजा शुद्धोधन के पुत्र के रूप में जन्म लेकर मानवों को अपने उपदेशों से आकर्षित करेंगे।

बुद्ध के त्रिपिटक

भगवान बुद्ध ने मानव समाज के कल्याण से जुड़े जितने भी महत्वपूर्ण आयाम हो सकते थे, उन सभी का उपदेश सारनाथ में देना प्रारम्भ किया। उनके ये उपदेश ही आगे चलकर 'धम्म' के नाम से प्रसिद्ध हुए, जिन्हें बाद में त्रिपिटक ग्रंथों में संकलित किया गया।

शान्ति संदेश की प्रासंगिकता

आज विश्व के कई हिस्सों में युद्ध और संघर्ष की स्थिति बनी हुई है। इन युद्धों के कारण न केवल लाखों लोगों का जीवन संकट में पड़ रहा भगवान बुद्ध के उपदेश में राष्ट्रियता का भावहै, बल्कि सभ्यताओं, संस्कृतियों और मानव मूल्यों का भी विनाश हो रहा है। जहाँ एक ओर विज्ञान और प्रगति की बातें होती हैं, वहीं दूसरी ओर हिंसा और विनाश मानवता पर गहरा प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं। ऐसे समय में भगवान बुद्ध के अहिंसा,

करुणा और शान्ति के उपदेश और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

उन्होंने सिखाया था कि द्वेष कभी द्वेष से समाप्त नहीं होता, बल्कि प्रेम और करुणा से ही उसका अन्त सम्भव है। यदि आज का मानव समाज उनके इन सिद्धान्तों को अपनाये, तो युद्ध और विनाश की जगह शान्ति और सह-अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

कई छद्म बौद्धों का मानना है भगवान बुद्ध वेद निन्दक थे, उन्होने वैदिक धर्म का विरोध किया परन्तु ज्ञान की तलाश में सिद्धार्थ घूमते-घूमते आलारा कालाम और उद्दक रामपुत्त के पास पहुँचे। जो की सांख्य दर्शन के बहुत बड़े विद्वान थे उनसे उन्होंने योग-साधना सीखी। उससे भी सन्तुष्ट न होकर वो आगे तपस्या करने लगे और आगे गया जी में ही पीपल के वृक्ष के नीचे उन्हे ज्ञान की प्राप्ति हुई जहाँ से वो सिद्धार्थ के जगह विश्व को बुद्ध स्वरूप में नजर आये उनके उपदेश विख्यात हुए। भगवान् बुद्ध के ये उपदेश उनके शिष्यों ने चार प्रकार से प्रचारित किया जो माध्यमिक, योगाचार, सौत्रांतिक एवं वैभाषिक के नाम से प्रसिद्ध हुए। भगवान् बुद्ध ने वस्तुतः निखिल वैदिक वाङ्मय के सार ॐ का ही परोक्ष रूप से प्रतिपादन किया यथा जगत के अनित्यत्व को सर्वं क्षणिक कह करके प्रतिपादित किया एवमेव अगर चार आर्य सत्यों के सिद्धान्त की बात करे या अष्टाङ्गिकमार्ग की, यह सभी वेदों से ही प्रसूत है।

राष्ट्रीयता के संदेश

राष्ट्रीयता के भाव को उन्होनें अपने आष्टाङ्गिकमार्ग मे अनुस्यूत किया हुआ है- बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग केवल व्यक्तिगत मुक्ति का साधन नहीं है, बल्कि एक आदर्श समाज और सशक्त राष्ट्र के निर्माण का आधार भी है। उनके 8 मार्गों का विवेचन करने यह और भी स्फुटित होता हैं। सम्यक दृष्टि हमें यह समझने की शक्ति देती है कि यह संसार दुःखमय है अतः दुःख से निवृत्ति हेतु प्रयासरत रहना चाहिये जब इस विचार को राष्ट्रवाद से जोड़ा जाता है, तब इसका अर्थ और व्यापक हो जाता है। सम्यक दृष्टि एक आदर्श नागरिक को यह समझने की क्षमता देती है कि राष्ट्र की उन्नति केवल भौतिक विकास से नहीं, बल्कि नैतिकता, न्याय और सामाजिक सन्तुलन से होती है।

सम्यक संकल्प हमें अपने देश और समाज के प्रति ईमानदार, सकारात्मक और कल्याणकारी सोच विकसित करने की प्रेरणा देता है। यह केवल व्यक्तिगत मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा नहीं है, बल्कि राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्यबोध को भी सुदृढ़ करता है। सम्यक वाक आपसी भाईचारे और एकता को बढ़ाता है, जिससे समाज में विभाजन और घृणा कम होती है। सम्यक कर्म यह सुनिश्चित करता है कि हमारे कार्य राष्ट्र और समाज के हित में हों, न कि केवल व्यक्तिगत लाभ के लिये। सम्यक जीविका हमें ऐसे कार्य चुनने की प्रेरणा देता है, जो देश के विकास में योगदान दें और किसी को हानि न पहुँचाए। ●

◆ अमित कुमार

चापेकर बन्धु : परिस्थितियाँ, प्रतिरोध और ऐतिहासिक महत्व

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अनेक, विचारधाराओं और व्यक्तित्वों के समन्वय से निर्मित हुआ है। इस इतिहास में जहाँ एक ओर उदारवादी मार्ग अपनाने वाले नेताओं की भूमिका रही, वहीं दूसरी ओर क्रान्तिकारी धारा ने भी औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध की एक सशक्त परम्परा विकसित की। इसी क्रान्तिकारी परम्परा के प्रारम्भिक चरण में चापेकर बन्धु-दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव का उल्लेख विशेष महत्त्व रखता है। उनका कार्य केवल एक हिंसक प्रतिरोध की घटना भर नहीं बल्कि उस समय की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों में उभरती असन्तोष की भावना का परिणाम था।

चापेकर बन्धुओं का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में महाराष्ट्र के चिंचवड़ क्षेत्र में एक पारम्परिक ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता हरि विनायक चापेकर कीर्तन के माध्यम से धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार करते थे। इस पारिवारिक वातावरण ने भाइयों के भीतर नैतिकता, कर्तव्यबोध और सामूहिक चेतना के संस्कार विकसित किये। यद्यपि उनकी औपचारिक शिक्षा सीमित थी, परन्तु सामाजिक अनुभव और सांस्कृतिक परिवेश ने उनके व्यक्तित्व को गहरायी प्रदान की।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पुणे क्षेत्र राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों का केंद्र बन चुका था। इसी समय बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने सार्वजनिक गणेशोत्सव और शिवाजी उत्सव के माध्यम से जनचेतना को संगठित करने का प्रयास किया। इन आयोजनों ने युवाओं के भीतर राष्ट्रीय भावना को जाग्रत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। चापेकर बन्धु भी इस वातावरण से अछूते नहीं रहे। उनके भीतर राष्ट्रीय अस्मिता का बोध धीरे-धीरे सुदृढ़ होता गया।

1896-97 के दौरान पुणे में फैली प्लेग महामारी ने स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया। महामारी के नियंत्रण के नाम पर ब्रिटिश प्रशासन ने कठोर और कई बार अपमानजनक उपाय अपनाये। घरों की तलाशी, लोगों को जबरन अलग करना और सामाजिक-धार्मिक मर्यादाओं की अनदेखी से स्थानीय जनता में असन्तोष को व्याप्त हो गया। इस प्रशासनिक व्यवस्था का संचालन प्लेग कमिश्नर रैण्ड के हाथों में था, जो जनता में अप्रिय हो चुका था।

ऐसी परिस्थितियों में चापेकर बन्धुओं का प्रतिरोध उभरता है। 22 जून 1897 को पुणे में आयोजित एक औपचारिक समारोह के दौरान दामोदर और बालकृष्ण चापेकर ने रैण्ड और उसके सहयोगी आयर्स्ट पर गोली चलायी। इस घटना में दोनों अंग्रेज अधिकारियों की मृत्यु हो गयी। यह घटना उस समय के सन्दर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इसने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रत्यक्ष हिंसक प्रतिरोध की एक मिसाल प्रस्तुत की।

हालाँकि इस घटना को केवल एक 'हत्या' के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। यह उस व्यापक असन्तोष का परिणाम था, चापेकर बन्धुओं ने जिस मार्ग का चयन किया, वह विवादास्पद अवश्य था, परन्तु उसे उस समय की परिस्थितियों और सीमित विकल्पों के सन्दर्भ में समझना आवश्यक है।

रैण्ड वध के बाद ब्रिटिश प्रशासन ने कठोर कार्रवाई शुरू की। दामोदर चापेकर को शीघ्र ही गिरफ्तार कर लिया गया और 1898 में उन्हें मृत्युदण्ड दिया गया। इसके पश्चात बालकृष्ण और वासुदेव ने उन व्यक्तियों को दण्डित किया, जिन्होंने प्रशासन को सूचना दी थी। अन्ततः वे भी गिरफ्तार हुए और 1899 में उन्हें भी फाँसी दी गयी। इस प्रकार तीनों भाइयों का जीवन अल्पायु में ही समाप्त हो गया, परन्तु उनकी गतिविधियों ने एक दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ा।

चापेकर बन्धुओं के योगदान का मूल्यांकन करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वे उस दौर के प्रतिनिधि थे, जब भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था। उस समय व्यापक राजनीतिक संगठन या स्पष्ट रणनीति का अभाव था। ऐसे में उनका कदम एक प्रकार की प्रतिक्रिया थी, जिसने आगे चलकर क्रान्तिकारी गतिविधियों को प्रेरित किया।

उनकी गतिविधियों का प्रभाव बाद के अनेक क्रान्तिकारियों पर देखा जा सकता है। विशेष रूप से विनायक दामोदर सावरकर जैसे व्यक्तित्वों ने सशस्त्र प्रतिरोध की विचारधारा को अधिक व्यवस्थित रूप दिया। इस दृष्टि से चापेकर बन्धु एक आरम्भिक कड़ी के रूप में देखे जा सकते हैं, जिन्होंने क्रान्तिकारी परम्परा की नींव रखने में योगदान दिया।

वे अपने कार्य को अन्याय के प्रतिकार के रूप में देखते थे। उनके निर्णयों में व्यक्तिगत लाभ या हानि की गणना नहीं, बल्कि सामूहिक अस्मिता का प्रश्न प्रमुख था। एक ओर उनके साहस और त्याग को स्वीकार करना चाहिये, उनके कार्यों का प्रभाव तत्कालीन समाज पर भी पड़ा। एक ओर जहाँ ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक नीतियों को और कठोर किया, वहीं दूसरी ओर भारतीय युवाओं में आत्मसम्मान और प्रतिरोध की भावना को बल मिला। इस प्रकार उनके कार्यों ने सामाजिक मनोविज्ञान को प्रभावित किया यदि उनके कार्यों का समग्र मूल्यांकन किया जाये, तो यह स्पष्ट होता है कि वे अपने समय की उपज थे। उनके निर्णयों में तत्कालीन परिस्थितियों का गहरा प्रभाव था। वे किसी स्थापित क्रान्तिकारी संगठन का हिस्सा नहीं थे, बल्कि व्यक्तिगत साहस और सामूहिक असन्तोष के आधार पर कार्य कर रहे थे। यही कारण है कि उनके कार्यों में एक ओर दृढ़ता दिखायी देती है, तो दूसरी ओर एक प्रकार की आकस्मिकता भी परिलक्षित होती है। उनके कार्यों का प्रभाव केवल तत्कालीन घटनाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने दीर्घकालिक स्तर पर भी प्रभाव डाला। भारतीय युवाओं में आत्मसम्मान और साहस की भावना को बल मिला, जबकि ब्रिटिश प्रशासन अधिक सतर्क और कठोर हो गया। इस प्रकार उनके कार्यों ने सत्ता और समाज के बीच सम्बन्धों को भी प्रभावित किया। ●

एक वृक्ष दस पुत्र समाना...

ऐसा व्यक्ति नर्क में नहीं जायेगा जो एक पीपल, एक नीम, एक बरगद, दस फूल वाले पौधे अथवा लताएँ, दो अनार, दो नारंगी और पाँच आम के वृक्ष लगाता है।

अश्वत्थमेकं पिचुमन्दमेकं न्यग्रोधमेकं दश पुष्पजातीः।
द्वे द्वे तथा दाडिममातुलिंगे पंचाम्ररोपी नरकं न याति।।

- वराहपुराण (172.39)

दस कुओं के बराबर एक बावड़ी होती है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है

दशकूपसमावापी दशवापी समो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः।।

- मत्स्यपुराण (154.511-512)

किसी दूसरे के द्वारा रोपित वृक्ष का सिंचन करने से भी महान फलों की प्राप्ति होती है, इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है

सेचनादपि वृक्षस्य रोपितस्य परेण तु।
महत्फलमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण (3.296.17)

पर्यावरण की दृष्टि से वृक्ष हमारा परम रक्षक और मित्र है। हमारी दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राणवायु देता है। वृक्ष हर प्रकार से पृथ्वी के रक्षक हैं, जो मरुस्थल पर नियंत्रण करते हैं, नदियों की बाढ़ों की रोकथाम करते हैं व जलवायु को स्वच्छ रखते हैं। ये समय पर वर्षा लाने में सहायक हैं, धरती की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं।

आञ्जनगन्धिं सुरभिं बह्वन्नामकृषीवलाम्
प्राहम्मृगाणां मातरमरण्यानिमशंसिषम्

ऋग्वेद के अरण्यानी सूक्त (10.146.6)

कस्तूरी आदि उत्तम सुवास से युक्त, सुगंधी, विपुल फल-मूलादि भक्ष्य अन्न से पूर्ण, कृषिवलों से रहित और मृगों की माता- ऐसी अरण्यानि की मैं स्तुति करता हूँ।

हमारे ऋषि-मुनि जानते थे कि प्रकृति जीवन का स्रोत है और पर्यावरण के समृद्ध और स्वस्थ होने से ही हमारा जीवन भी समृद्ध और सुखी होता है। वे प्रकृति की देवशक्ति के रूप में उपासना करते थे और उसे परमेश्वरी भी कहते थे। उन्होंने जीवन के आध्यात्मिक पक्ष पर गहरा चिन्तन किया, पर पर्यावरण पर भी उतना ही ध्यान दिया। जो कुछ पर्यावरण के लिये हानिकारक था, उसे आसुरी प्रवृत्ति कहा और जो हितकर है, उसे दैवीय प्रवृत्ति माना। आज मनुष्य यह समझता है कि समस्त प्राकृतिक सम्पदा पर सिर्फ उसी का आधिपत्य है। हम जैसा चाहें, इसका उपभोग करें। इसी भोगवादी प्रवृति के कारण हमने इसका इस हद तक शोषण कर लिया है कि अब हमारा अपना अस्तित्व ही संकट में पड़ने लगा है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि प्रकृति, पर्यावरण और परिस्थिति की रक्षा करो, अन्यथा हम भी नहीं बच सकेंगे।

सम्राट अशोक, हर्षवर्धन और शेरशाह सूरी ने जो राजमार्ग बनवाये थे, उनके लिये कितने ही वृक्षों की बलि चढ़ानी पड़ी थी। परन्तु उन्होंने उन सड़कों के दोनों तरफ सैकड़ों नये वृक्ष भी लगवाए थे, ताकि पर्यावरण में कोई दोष न आ जाये। आज भी आप पायेंगे कि ग्रामीण समाज अपने घरों व खेतों के आसपास वृक्ष लगाते हैं। यहाँ वृक्षों के थाल बनाना, उनकी जड़ों पर मिट्टी चढ़ाना, सींचना, वृक्षों को पूजना अथवा आदर प्रकट करना आज भी पुण्यदायक कार्य मानते हैं। ये सारी प्रथाएं इसीलिए शुरू हुईं ताकि वृक्षों-वनस्पतियों की रक्षा होती रहे।

हमारे शास्त्रों में पर्यावरणीय घटकों की शुद्धता के लिये हमें एक अमोघ उपाय प्रदान किया गया है। वह उपाय हैं यज्ञ। यज्ञ आध्यात्मिक उपासना का साधन होने के साथ, पर्यावरण को शुद्ध करने, उसे रोग और कीटाणुरहित रखने तथा प्रदूषणरहित रखने का भी साधन है। भारतीय संस्कृति की यह शैली रही है कि इसमें जीवन के जिन कर्त्तव्यों अथवा मूल्यों को श्रेष्ठ और आवश्यक माना गया है, उन्हें धार्मिकता और पुण्य के साथ जोड़ दिया गया है, ताकि लोग उनका पालन अनिवार्य रूप से करें। जैसे कि तुलसी, पीपल की रक्षा आदि। ●

महाप्रभु की रथयात्रा-2026 के लिये अक्षय तृतीया से निर्माण कार्य पूजा सम्पन्न होने के बाद रथ निर्माण का कार्य शुरू हो चुका है। प्रथम चरण में तीनों रथों के 42 पहियों के निर्माण हेतु 'तुम्ब बिन्ध' कार्य अन्तिम चरण में है। महाप्रभु के रथ नन्दीघोष में 16 पहिये, भ्राता बलभद्र के रथ तालध्वज में 14 पहिये, तथा देवी सुभद्रा के रथ दर्पदलन में 12 पहिये होते हैं।

सौर ऊर्जा में भारत

धूप केवल ताप नहीं, सम्भावना है, एक ऐसी सम्भावना जो धूप ऊर्जा के भविष्य को आकार दे रही है। "सौर ऊर्जा में भारत" केवल तकनीकी विकास की कथा नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, पर्यावरणीय सन्तुलन और सामाजिक न्याय की ओर बढ़ते एक राष्ट्र की कहानी है। जैसे-जैसे दुनिया जलवायु परिवर्तन की चुनौती से जूझ रही है, भारत ने सूर्य की किरणों को अपनी ऊर्जा-नीति का केन्द्र बना लिया है। भारत भौगोलिक रूप से सौर ऊर्जा के लिए अत्यन्त अनुकूल देश है। यहाँ प्रति वर्ष लगभग 300 से अधिक धूप वाले दिन होते हैं, जो सौर ऊर्जा उत्पादन के लिये आदर्श स्थिति प्रदान करते हैं। यही कारण है कि भारत ऊर्जा भारत के लिये एक वरदान सिद्ध हुई है। भारत सरकार ने वर्ष 2070 तक 'नेट जीरो' उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है, जिसमें सौर ऊर्जा की हिस्सेदारी सबसे प्रमुख होने वाली है। देश के पास लगभग 5,000 लाख करोड़ किलोवाट घण्टा (kWh) प्रति वर्ष की सौर ऊर्जा क्षमता है, जो हमारी वर्तमान कुल वार्षिक खपत से कहीं अधिक है।

सौर ऊर्जा के विकास में भारत ने वैश्विक स्तर पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबन्धन (International Solar Alliance) की स्थापना में भारत की अग्रणी भूमिका रही है, जिसका उद्देश्य सौर ऊर्जा के उपयोग को वैश्विक स्तर पर बढ़ाना है। यह पहल भारत की कूटनीतिक दूरदृष्टि को भी दर्शाती है, जहाँ ऊर्जा केवल घरेलू जरूरत नहीं, बल्कि अन्तरराष्ट्रीय सहयोग का माध्यम बन जाती है। भारत में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में कई

ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में विशेषकर सौर ऊर्जा में तेजी से प्रगति की है। सरकार ने राष्ट्रीय सौर मिशन के माध्यम से इस दिशा में ठोस कदम उठाए हैं, जिसका उद्देश्य सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देना और पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता को कम करना है। भारत वर्तमान में दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती ऊर्जा प्रणालियों में से एक है। एक विकासशील राष्ट्र होने के नाते भारत की बिजली की माँग लगातार बढ़ रही है, और इस माँग को पूरा करने के लिए कोयले जैसे पारम्परिक स्रोतों पर निर्भर रहना न केवल पर्यावरण के लिये हानिकारक है, बल्कि आर्थिक रूप से भी महँगा है। इसी सन्दर्भ में सौर महत्वपूर्ण परियोजनाएँ स्थापित की गयी हैं। उदाहरण के लिये, भड़ला सोलर पार्क (Bhadla Solar Park) विश्व के सबसे बड़े सौर ऊर्जा पार्कों में से एक है। इसी प्रकार, पावागढ़ सोलर पार्क (Pavagada Solar Park) और कुरनूल अल्ट्रा मेगा सोलर पार्क (Kurnool Ultra Mega Solar Park) भी भारत की सौर क्षमता को सशक्त बनाते हैं। ये परियोजनाएँ न केवल ऊर्जा उत्पादन बढ़ाती हैं, बल्कि स्थानीय रोजगार और आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहित करती हैं। सौर ऊर्जा के प्रसार में रूफटॉप सोलर योजनाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान है। शहरों और गाँवों में घरों की छतों पर सोलर पैनल लगाकर लोग अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को स्वयं पूरा कर सकते

स्वदेशी ऊर्जा की ओर बढ़ता भारत

रूफटॉप सोलर में लखनऊ बना देश का नम्बर वन शहर

लखनऊ। स्वदेशी ऊर्जा को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए लखनऊ देश का नम्बर वन शहर बन गया है, जहाँ रूफटॉप सोलर इंस्टॉलेशन की संख्या 87,000 के पार पहुँच चुकी है। यह उपलब्धि न केवल शहर के लिये, बल्कि पूरे देश के लिये स्वच्छ और आत्मनिर्भर ऊर्जा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। ऊर्जा क्षेत्र से जुड़े अधिकारियों के अनुसार, शहर में पिछले कुछ वर्षों में सोलर पैनल लगाने की गति में तेजी आयी है। केन्द्र और राज्य सरकार की विभिन्न सब्सिडी योजनाओं और जागरूकता अभियानों ने इसमें अहम भूमिका निभायी है। खासतौर पर आवासीय क्षेत्रों में लोगों ने बिजली के बढ़ते खर्च और पर्यावरणीय चिन्ताओं को देखते हुए सोलर ऊर्जा को अपनाना शुरू किया है। विशेषज्ञों का मानना है कि लखनऊ का यह मॉडल अन्य शहरों के लिये प्रेरणा बन सकता है। रूफटॉप सोलर सिस्टम न केवल बिजली के बिल को कम करता है, बल्कि पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोतों पर निर्भरता भी घटाता है, जिससे कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है। नगर प्रशासन का कहना है कि आने वाले समय में इस संख्या को और बढ़ाने के लिये नयी योजनाएँ लागू की जाएंगी। इसके तहत अधिक से अधिक घरों और व्यावसायिक भवनों को सोलर ऊर्जा से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। ऊर्जा विश्लेषकों के अनुसार, यदि इसी तरह देश के अन्य शहर भी स्वदेशी सोलर ऊर्जा को अपनाते हैं, तो भारत ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकता है।

हैं। इससे न केवल बिजली बिल में कमी आती है, बल्कि ऊर्जा का विकेन्द्रीकरण भी होता है। यह एक ऐसा मॉडल है जहाँ उपभोक्ता स्वयं उत्पादक बन जाता है- एक तरह से ऊर्जा लोकतंत्र की स्थापना होती है। हालाँकि, इस क्षेत्र में कई चुनौतियाँ भी हैं। सौर ऊर्जा उत्पादन दिन के समय और मौसम पर निर्भर करता है, जिससे ऊर्जा की निरन्तरता प्रभावित होती है। इसके अलावा, सोलर पैनलों के निर्माण और भण्डारण तकनीकों की लागत भी एक बड़ी चुनौती है। भूमि अधिग्रहण और पर्यावरणीय प्रभाव जैसे मुद्दे भी समय-समय पर सामने आते हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए ऊर्जा भण्डारण (बैटरी) तकनीक और स्मार्ट ग्रिड जैसे नवाचारों पर ध्यान देना आवश्यक है।

भारत सरकार ने इन चुनौतियों से निपटने के लिये कई नीतिगत उपाय किये हैं। "प्रधानमंत्री कुसुम योजना" जैसे कार्यक्रम किसानों को सौर ऊर्जा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करते हैं। इसके अन्तर्गत किसान सौर पम्पों का उपयोग कर सकते हैं और अतिरिक्त बिजली को ग्रिड में बेचकर आय अर्जित कर सकते हैं। यह योजना कृषि और ऊर्जा- दोनों क्षेत्रों को एक साथ सशक्त बनाती है। सौर ऊर्जा का महत्व केवल आर्थिक या तकनीकी नहीं, बल्कि नैतिक भी है। यह एक स्वच्छ, अक्षय और पर्यावरण के अनुकूल ऊर्जा स्रोत है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहायक है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए, जहाँ ऊर्जा की माँग लगातार बढ़ रही है, सौर ऊर्जा एक स्थायी समाधान प्रस्तुत करती है। यह आने वाली पीढ़ियों के लिये एक सुरक्षित और सन्तुलित पर्यावरण सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अन्ततः, सौर ऊर्जा में भारत की यात्रा एक उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर है- एक ऐसा भविष्य जहाँ ऊर्जा केवल संसाधन नहीं, बल्कि अधिकार होगी; जहाँ विकास और पर्यावरण के बीच सन्तुलन स्थापित होगा। सूर्य की यह ऊर्जा केवल आकाश से नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास और संकल्प से भी निकलती है। ●

सौर ऊर्जा से आत्मनिर्भरता की नयी गाथा लिख रही रामनगरी

अयोध्या। भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या 70 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के साथ आत्मनिर्भरता की नयी गाथा लिख रही है। यहाँ राम नाम की गूँज के साथ छतों पर चमकते नीले सोलर पैनल इस नई क्रांति की कहानी कह रहे हैं। अपनी कुल बिजली खपत का 33 प्रतिशत उत्पादन खुद कर पर्यावरण संरक्षण की मिसाल कायम व बाहरी ग्रिडों पर निर्भरता कम की है। श्रीराम मन्दिर निर्माण के चलते अयोध्या के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय वृद्धि तय की थी। बड़े बड़े होटलो व संस्थानों का निर्माण होने से ऊर्जा खपत भी बढ़ती। ऐसे में योगी सरकार ने बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने और कार्बन उत्सर्जन कम करके पर्यावरण संरक्षण के लिये इसे सोलर सिटी के रूप मे विकसित करने का निर्णय लिया। तीन वर्ष पूर्व सरयू किनारे रामपुर हलवारा में 168 एकड़ भू-भाग पर सोलर प्लांट स्थापित किया गया जिससे अब 40 मेगावाट बिजली प्रतिदिन उत्पादित हो रही है। संयंत्रों के माध्यम से सीधे पावर ग्रिड होते हुए दर्शन नगर स्थित विद्युत पारेषण खंड की इकाई को ट्रांसफर की जाती है। जब आप अयोध्या की सीमा में प्रवेश करते हैं तो नीले पैनलों की चादर भविष्य की सुरक्षित ऊर्जा का एहसास कराती है। अयोध्या एयरपोर्ट, अमृत बाटलर्स प्लांट, रेलवे स्टेशन सरकारी व निजी संस्थान सहित जिले में लगभग छह हजार से अधिक घरों में सौर ऊर्जा संयंत्र लग चुके हैं।

अब गीतों में गूंजेगा संविधान

रामचरितमानस की तर्ज पर छंदों में ढला भारत का संविधान

अब भारत का संविधान भी रामचरितमानस की तरह गाकर और आसानी से समझा जा सकेगा। पहली बार पूरे संविधान को दोहा, रोला और विभिन्न छन्दों में पिरोकर काव्य रूप दिया गया है। 'छन्दबद्ध भारत का संविधान' नामक इस अनूठे ग्रंथ को भारत समेत नेपाल, इण्डोनेशिया, सिंगापुर और कुवैत के 142 रचनाकारों ने मिलकर तैयार किया है।

512 पन्नों की इस कृति में संविधान के सभी अनुच्छेदों को 2110 दोहों और 422 रोलों में प्रस्तुत किया गया है, जबकि 22 भागों को अलग-अलग छंदगीतों में ढाला गया है। खास बात यह है कि मूल भाव को बदले बिना इसे सरल और गायन योग्य बनाया गया है, ताकि आमजन और विद्यार्थी इसे आसानी से समझ सकें।

इस अनूठी उपलब्धि को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है। 26 नवम्बर 2022 से शुरू हुआ यह कार्य 26 नवम्बर 2023 को पूरा हुआ, जो संविधान दिवस से भी प्रेरित है।

संगीतमय संविधान के कुछ छंद

बाइस भाग व नौ अनुसूची,
प्रारम्भिक रूप समाया।
अनुच्छेद त्री शत पंचान्बे,
भाव विधिक यह पहुँचाया।।
संशोधन से वृद्धि सदा कर,
न्याय सकल जग दर्शाया।
सन पचास छब्बीस जनवरी,
लागू हो करके आया।।

रामनगरी हुई बैरियर मुक्त आवागमन होगा निर्बाध

अयोध्या की रामनगरी बैरियर मुक्त हो गयी और आवागमन निर्बाध शुरू हो गया। नगरी की सुरक्षा व्यवस्था विभिन्न नाका-नुक्कड़ों पर स्थापित 52 बैरियरों और चार वाच टावरों से संचालित है। यद्यपि यह नगरी की सुरक्षा सम्बन्धी संवेदनशीलता एवं सुरक्षा से जुड़े विशेषज्ञों के सुझाव के अनुरूप है, किन्तु इस व्यवस्था के चलते प्रायः नागरिक स्वायत्तता प्रभावित होने की चिंता भी व्यक्त होती रहती है। अति संवेदनशील सुरक्षा व्यवस्था के चलते न केवल दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं को जगह-जगह रोक-टोक का सामना करना पड़ता था, बल्कि स्थानीय नागरिकों का नित्य का आवागमन भी यत्र-तत्र प्रतिबन्धित होती थी। रामजन्मभूमि परिसर को छोड़ कर पैदल आवागमन तो शायद ही कहीं प्रतिबन्धित हो, किन्तु वाहन (विशेष रूप से चारपहिया) के साथ पहुँचना अग्नि परीक्षा के समान होता था।

'अपने घर वापस आ जायें'

● डोनाल्ड ट्रम्प के नरक वाले बयान पर टेक लीडर श्रीधर वेम्बु का खुला पत्र

भारतीय कम्पनी जोहो (Zoho) के फाउण्डर श्रीधर वेम्बु, सोशल मीडिया पर अपने विचार सामने रखते हैं। हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का एक बयान सामने आया था, जिसमें उन्होंने भारत के लिए 'नरक' शब्द का इस्तेमाल किया। अब श्रीधर वेम्बु ने अमेरिका में रह रहे भारतीयों के नाम एक खुला पत्र यानी ओपन लेटर लिखा है। इस पत्र में उन्होंने कहा है कि जिन भारतीय अमेरिकियों को यह लगता है कि अगला चुनाव इसे ठीक कर देगा, उन्हें पता होना कि वो लोग हमारी भारतीय सभ्यता से नफरत करते हैं। वो खुद सभ्यता से ही नफरत करते हैं। श्रीधर वेम्बु ने अमेरिका में रह रहे भारतीय मूल के लोगों से भारत यानी अपने घर वापस आने की अपील की है।

श्रीधर वेम्बु ने पत्र में क्या लिखा?

मेरे भारत के भाइयों और बहनों, जिस तरह मैं 37 साल पहले पहुँचा था, आप भी बिना पैसे के लेकिन भारत की अच्छी शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत के साथ अमेरिका आये। आपने सफलता हासिल की।

अमेरिका हमारे लिये अच्छा रहा। इसके लिये हमें हमेशा आभारी रहना चाहिये। फिर भी आज, अमेरिकियों की एक बड़ी आबादी यह मानती है कि भारतीय अमेरिकियों की 'नौकरियाँ छीन लेते हैं' और अमेरिका में हमारी सफलता गलत तरीके से हासिल की गयी है। आपको लग सकता है कि अगला चुनाव इसे ठीक कर देगा, लेकिन आपकी पसन्द उन लोगों के बीच होगी जो हमारी भारतीय सभ्यता से नफरत करते हैं और उन लोगों के बीच जो खुद सभ्यता से ही नफरत करते हैं।

'भारत पर निर्भर करेगा हमें मिलने वाला सम्मान'

श्रीधर वेम्बु ने लिखा कि एक बात आज भी सच है और भविष्य में भी सच रहेगी- दुनिया भर में भारतीयों को जो सम्मान मिलता है, वह काफी हद तक खुद भारत की किस्मत पर निर्भर करेगा। अगर भारत गरीब रहा तो 'वोक वामपंथी' हमें दया के साथ नैतिक उपदेश देंगे और 'कट्टर दक्षिणपंथी' हमें तिरस्कार के साथ ('नरक') अलग तरह के नैतिक उपदेश देंगे। हमें इनमें से किसी को भी 'सम्मान' समझने की भूल नहीं करनी चाहिये। आज की दुनिया में सम्मान,

समृद्धि और सुरक्षा सिर्फ एक सोर्स से आता है- राष्ट्र की तकनीकी शक्ति (Technological Prowess)। भारत उस शक्ति को हासिल करने के लिये लोगों को तैयार कर देता है, लेकिन हमने अपने टैलेन्ट का बड़ा हिस्सा एक्सपोर्ट कर दयि, खासकर अमेरिका को।

'घर वापस आ जायें'

श्रीधर वेम्बु ने लिखा कि आप में से कई लोगों के लिये यह विचार करना कठिन हो सकता है, लेकिन कृपया अपने घर वापस आ जाएँ। भारत को आपके टैलेन्ट की जरूरत है। हमारी बड़ी युवा आबादी को उस टेक लीडरशिप की जरूरत है जो आपने वर्षों में हासिल किया है।

सुप्रसिद्ध लेखक बलबीर पुंज का निधन

सुप्रसिद्ध पत्रकार व लेखक बलबीर पुंज के निधन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने गहन शोक व्यक्त किया है।

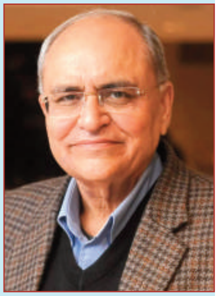

अपने शोक सन्देश में होसबाले जी ने कहा कि, देश के सुप्रसिद्ध चिन्तक, लेखक तथा पूर्व सांसद बलवीर पुंज जी के दुःखद निधन से भारत के सार्वजनिक जीवन को गहरी क्षति पहुँची है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उनकी स्मृति में आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। लम्बे सार्वजनिक जीवन में वे हमेशा व्यापक अध्ययन तथा ज़िम्मेदारी पूर्वक अपने विचारों को व्यक्त करते रहे। समसामयिक विषयों में उनके सटीक लेख हमेशा महत्वपूर्ण रहे। ईश्वर उनके परिवार जनों व मित्रों को यह दुःख सहन करने की शक्ति दें तथा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

॥ ॐ शान्तिः ॥

सीईटी परीक्षा केन्द्र पर जनेऊ काटकर कूड़ेदान में फेंका

कर्नाटक में कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (सीईटी) के दौरान एक छात्र के साथ कथित दुर्व्यवहार का मामला सामने आया है। छात्र सुप्रीत ने आरोप लगाया कि देवनहल्ली के पास स्थित एक परीक्षा केन्द्र पर प्रवेश के दौरान स्टाफ ने उसका जनेऊ जबरन काटकर कूड़ेदान में फेंक दिया। छात्र के अनुसार, उसने

खुद धागा हटाने की बात कही थी, लेकिन कर्मचारियों ने ऐसा करने के बजाय उसे अपमानित किया, जिससे उसके परीक्षा प्रदर्शन पर असर पड़ा। उसने दोबारा परीक्षा या ग्रेस मार्क्स की माँग की है।

इस घटना की अखिल कर्नाटक ब्राह्मण महासभा ने निन्दा करते हुए कार्रवाई की माँग की है। इससे पहले भी ऐसे ही मामलों में छात्रों से धार्मिक प्रतीक हटवाने के आरोप लगे थे। कर्नाटक के उच्च शिक्षा मंत्री एमसी सुधाकर ने जाँच के आदेश दिये हैं, जबकि विपक्ष के नेता आर अशोक ने इसे हिन्दू परम्पराओं पर हमला बताया है।

गाँव की प्रतिभाओं को मिली पहचान, खेत-खलिहान से भरी आईआईटी की उड़ान

खेतों की पगडंडियों से उठकर आईआईटी के सपनों तक पहुँचने की यह कहानी केवल सफलता की नहीं, बल्कि संघर्ष, संकल्प और सही मार्गदर्शन की ताकत का जीवन्त उदाहरण है। सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों के बावजूद अर्जुनगंज स्थित महामना शिक्षण संस्थान के छात्रों ने जेईई मेन्स 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए यह साबित कर दिया कि प्रतिभा हालातों की मोहताज नहीं होती। इस बार 16 में से 15 छात्रों ने पहले ही प्रयास में सफलता हासिल कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

गोरखपुर के पीयूष राम त्रिपाठी, चन्दौली के शशि प्रकाश कुशवाहा, प्रतापगढ़ के अंशुमान पाण्डेय और रायबरेली के अथर्व श्रीवास्तव जैसे नाम आज उन हजारों सपनों की आवाज बन गये हैं, जो संसाधनों के अभाव में अक्सर पीछे छूट जाते हैं। किसी के पिता किसान हैं तो कोई मजदूरी कर परिवार चलाता है, लेकिन इन बच्चों ने यह साबित कर दिया कि काबिलियत पैसों की मोहताज नहीं होती, बल्कि मार्गदर्शन मिलने पर वह नयी ऊँचाइयों को छू सकती है। भाऊराव देवरस सेवा न्यास के इस प्रकल्प ने इन छात्रों को केवल शिक्षा ही नहीं दी, बल्कि उनके सपनों को साकार करने का मंच भी दिया वह भी पूरी तरह निःशुल्क। 11वीं-12वीं की पढ़ाई, जेईई की तैयारी और रहने-खाने की सम्पूर्ण व्यवस्था एक ही परिसर में उपलब्ध करायी जाती है। यह मॉडल उन प्रतिभाओं को नयी दिशा दे रहा है, जो आर्थिक अभाव के कारण पीछे रह जाती हैं।

सफलता का मॉडल बना पहचान

संस्थान के सचिव रंजीव तिवारी के अनुसार, इस बार 4 छात्रों ने 90 पर्सेन्टाइल से अधिक अंक प्राप्त कर यह दिखाया है कि सही मार्गदर्शन मिलने पर प्रतिभा हर मंच पर चमक सकती है। विशेष रूप से बालिका प्रकल्प की तीन छात्राओं ने भी पहली ही कोशिश में सफलता हासिल कर यह सन्देश दिया कि अब बेटियाँ भी किसी से कम नहीं हैं और हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं।

बदलते भारत की तस्वीर

वर्ष 2019 में शुरू हुआ यह संस्थान आज उन बच्चों के लिये उम्मीद का केन्द्र बन चुका है, जिनके सपने अक्सर आर्थिक अभाव में दम तोड़ देते हैं। अब तक यहाँ से निकले 60 से अधिक छात्र देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में बी-टेक और एमबीबीएस की पढ़ायी कर रहे हैं। आईआईटी (बीएचयू) के पूर्व छात्र ई. आदित्य कुमार और उनकी टीम यहाँ निःशुल्क शिक्षण कार्य कर रही है, जबकि सफल पूर्व छात्र और वरिष्ठ आईएएस अधिकारी लगातार छात्रों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। जब समाज साथ खड़ा होता है, तो असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

अब अगली उड़ान की तैयारी

महामना शिक्षण संस्थान ने सत्र 2026-27 के लिये एक मई से प्रवेश प्रक्रिया शुरू करने की घोषणा की है। यह उन सपनों का चयन है जो आगे चलकर देश की दिशा तय कर सकते हैं। बता दें कि आवेदन वही छात्र कर सकेंगे, जिन्होंने हाईस्कूल 2026 में 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हों और जिनके परिवार की वार्षिक आय 3.5 लाख रुपये से कम हो। चयन प्रक्रिया लिखित परीक्षा, साक्षात्कार और सत्यापन के आधार पर पूरी की जायेगी।

यूपी के संस्कृत स्कूलों में शुरू हुआ 'डिजिटल गुरुकुल' मॉडल

• अब श्लोक के साथ छात्र सीखेंगे साइबर सुरक्षा के गुर

लखनऊ। प्रदेश में संस्कृत विद्यालय अब केवल श्लोक और शास्त्र तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि 'डिजिटल गुरुकुल' मॉडल के जरिये आधुनिक शिक्षा की ओर तेज़ी से बढ़ रहे हैं।

परम्परागत ज्ञान के साथ डिजिटल और साइबर साक्षरता को जोड़ते हुए विद्यालयों में हर सप्ताह एक 'विशेष दिवस' आयोजित किया जायेगा, जहाँ छात्रों की व्यक्तिगत क्षमता का आकलन कर उन्हें नयी तकनीकों और रोजगारोन्मुख कौशल से जोड़ा जायेगा।

नयी पहल के तहत छात्रों को साइबर सुरक्षा, साइबर अपराध से बचाव और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के सुरक्षित उपयोग की व्यावहारिक जानकारी दी जायेगी। इसके लिये आईटी और साइबर क्षेत्र के विशेषज्ञों को विद्यालयों में आमंत्रित कर व्याख्यान और इंटरैक्टिव सत्र कराये जायेंगे, ताकि बच्चे डिजिटल दुनिया के खतरों और उनके समाधान को आसानी से समझ सकें। छात्रों को ई-लर्निंग की दिशा में आगे बढ़ाने के लिये उन्हें खान एकेडमी, द टीचर एप, मनोदर्पण पोर्टल और माय करियर एडवाइजर एप जैसे प्लेटफॉर्म के उपयोग के लिये प्रेरित किया जा रहा है। इससे उनकी पढ़ायी न सिर्फ रोचक बनेगी, बल्कि करियर प्लानिंग में भी मदद मिलेगी।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद के सचिव शिवलाल के मुताबिक, संस्कृत विद्यालयों में अब ज्योतिष, योग विज्ञान और वास्तुशास्त्र जैसे विषयों में डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू करने के लिये तेजी से आवेदन आ रहे हैं। इससे पारम्परिक विषयों को व्यावसायिक रूप देकर छात्रों के लिये रोजगार के नये रास्ते खुलेंगे। विद्यालयों में कुटीर उद्योगों के प्रदर्शन, स्थानीय शिल्प और उद्यमिता से जुड़े कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। ●

भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय सोमनाथ पुनर्स्थापना

सोमनाथ पुनर्स्थापना दिवस भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जो केवल एक मन्दिर के पुनर्निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक निरन्तरता, ऐतिहासिक स्मृति और राष्ट्रीय आत्मबोध के पुनर्प्रतिष्ठान से भी जुड़ा है। सोमनाथ मन्दिर प्राचीन काल से आस्था का एक प्रमुख केन्द्र रहा है और साथ ही यह भारत की समुद्री सम्पर्क परम्पराओं तथा सांस्कृतिक जीवन का भी साक्षी रहा है।

मध्यकालीन कालखण्ड में इस मन्दिर को कई बार क्षति पहुँची, जिनमें महमूद ग़ज़नी का 1025 ईस्वी का आक्रमण ऐतिहासिक रूप से उल्लेखित है। इन घटनाओं को केवल राजनीतिक या सैन्य परिप्रेक्ष्य में ही नहीं, बल्कि उस समय के व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों में भी समझना आवश्यक है। इसके बाद विभिन्न कालों में मन्दिर का पुनर्निर्माण और संरक्षण होता रहा, जो यह संकेत देता है कि स्थानीय समाज और परम्पराएँ अपने महत्वपूर्ण स्थलों के प्रति निरन्तर प्रतिबद्ध रहीं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, जब भारत अपनी संस्थाओं और पहचान को पुनर्गठित कर रहा था, तब सोमनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण एक प्रतीकात्मक महत्व प्राप्त करता है। 11 मई 1951 को प्राण-प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ, जिसमें भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। इस अवसर को सांस्कृतिक विरासत के पुनर्स्मरण और संरक्षण के रूप में देखा गया।

इस प्रक्रिया में सरदार वल्लभभाई पटेल और के. एम. मुंशी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने इस पुनर्निर्माण को जनसहभागिता के माध्यम से सम्पन्न करने पर बल दिया, जिससे यह पहल व्यापक सामाजिक समर्थन से जुड़ सके। यह तथ्य इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यह कार्य केवल राज्य की पहल न होकर समाज की भागीदारी से भी संचालित हुआ।

वैचारिक रूप से, सोमनाथ पुनर्स्थापना दिवस को सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और ऐतिहासिक चेतना के पुनर्संयोजन के रूप में समझा जा सकता है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि किसी भी समाज के लिये उसके प्रतीक, स्मृतियाँ और परम्पराएँ महत्वपूर्ण होती हैं, और समय-समय पर उनका पुनर्परिचय तथा संरक्षण आवश्यक हो जाता है।

समकालीन सन्दर्भ में यह दिवस हमें यह विचार करने का अवसर देता है कि सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, विविधता के सम्मान और ऐतिहासिक समझ के सन्तुलन के साथ आगे बढ़ना कैसे सम्भव है। इस प्रकार, सोमनाथ पुनर्स्थापना दिवस केवल अतीत की एक घटना नहीं, बल्कि वर्तमान में सांस्कृतिक संवाद और ऐतिहासिक जागरूकता का एक माध्यम भी है।

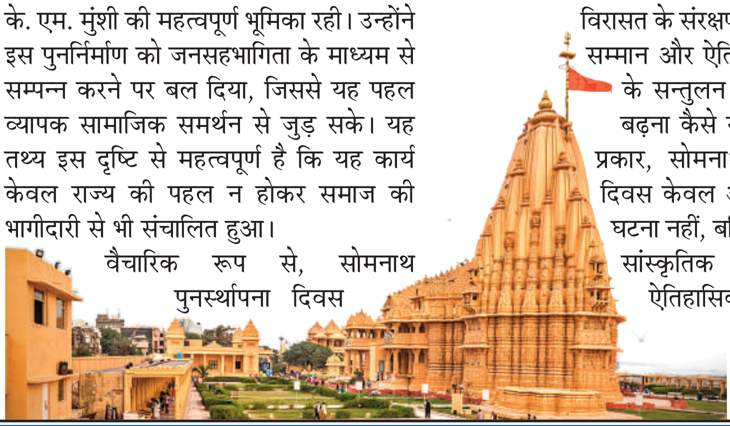

राम मन्दिर के स्थान को प्रमाणित करने वाले ब्रजवासी लाल

प्रख्यात पुरातत्वविद ब्रजवासी लाल उच्च प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने भारत की श्रेष्ठ ऐतिहासिक विरासत को स्थापित करने में अपने अनुसंधानों के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अनेक रहस्यों का लगाते हुए अयोध्या में राम मन्दिर की खोज में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। झांसी जिले में जन्मे ब्रजवासी लाल ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। अध्ययन पूरा करने के उनकी रुचि पुरातत्व में विकसित हुई। 1943 में वे एक ब्रिटिश पुरातत्वविद मोर्टिमर व्हीलर के अधीन उत्खनन में प्रशिक्षु बने। इस प्रकार पुरातत्वविद के रूप में उनके कैरियर की शुरुआत तक्षशिला और बाद में हड़प्पा जैसे स्थलों से हुई। उन्होंने 50 से अधिक वर्षों तक पुरातत्वविद के रूप में कार्य किया और हिन्दू समाज व भारत का सही इतिहास खोज निकालने का अत्यन्त पवित्र व ऐतिहासक कार्य किया।

आज अयोध्या में दिव्य- भव्य राम मन्दिर के निर्माण से जिस प्रकार "हिन्दुत्व" व "स्व" की भावना का जागरण हुआ है उसका श्रेय कहीं न कहीं ब्रजवासी लाल जी को दिया जाये तो

अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्हें 1968 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का महानिदेशक नियुक्त किया गया। इसके बाद वह भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला के निदेशक बने। उन्होंने 1970 से 75 तक जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर में पुरातत्व अध्ययन विद्यालय में विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

उन्होंने अनेक ऐतिहासिक स्थलों की खुदाई करवाकर इतिहास के अनेक रहस्यों का खुलासा किया है। उन्होंने हस्तिनापुर, (उड़ीसा) के शिशुपालगढ़, दिल्ली के निकट पुराना किला और राजस्थान के कालीबंगन सहित कई महत्वपूर्ण स्थलों की खुदाई करवाकर वामपंथियो के मुँह बन्द करवाने का अतुलनीय कार्य किया। 1975 -76 के बाद उन्होंने रामायण से जुड़े अयोध्या, भारद्वाज आश्रम, शृंगवेरपुर, नन्दीग्राम और चित्रकूट जैसे स्थलों की खुदाई कर उनके विषय में ऐतिहासिक तथ्य दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किये। उन्होंने 20 से अधिक पुस्तकें व 150 से अधिक शोधपत्र लिखे हैं और उन सभी शोधपत्रों में हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी है।

ब्रजवासी लाल जी ने अपने उत्खनन व शोधकार्य से उन वामपंथी इतिहासकारों व लेखकों को प्रमाणों के साथ गलत सिद्ध किया जिन्होंने रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद आदि के साथ साथ भगवान श्रीराम व श्रीकृष्ण को भी काल्पनिक बताया था। वर्ष 2008 में उन्होंने अपनी पुस्तक "राम, उनकी ऐतिहासिकता मन्दिर", सेतु साहित्य पुरातत्व और अन्य विज्ञान के साक्ष्य में लिखा कि,"बाबरी मस्जिद के खम्भों से जुड़े बारह पत्थर के खम्भे थे जिन पर न केवल विशिष्ट हिन्दू रूपांकन और ढलाई थी अपितु हिन्दू देवी देवताओं की आकृतियाँ भी थीं।

कंजूस गीदड़

जंगल में एक गीदड़ रहता था। वह बड़ा कंजूस था क्योंकि वह एक जंगली जीव था इसलिये हम रुपये-पैसों की कंजूसी की बात नहीं कर रहे। वह कंजूसी अपने शिकार को खाने में किया करता था। जितने शिकार से दूसरा गीदड़ दो दिन काम चलाता, वह उतने ही शिकार को सात दिन तक खींचता। जैसे उसने एक खरगोश का शिकार किया। पहले दिन वह कुछ ही हिस्सा खाता। बाकी बचाकर रखता। दूसरे दिन कुछ ही हिस्सा खाता। ठीक वैसे जैसे कंजूस व्यक्ति पैसा घिस-घिसकर खर्च करता हैं। गीदड़ अपने पेट की कंजूसी करता। इस चक्कर में प्रायः भूखा रह जाता। इसलिये दुर्बल भी बहुत हो गया था।

एक बार उसे एक मरा हुआ बारहसिंघा हिरण मिला। वह उसे खींचकर अपनी माँद में ले गया। उसने पहले हिरण का कुछ हिस्सा खाने का फैसला किया ताकि मांस बचा रहे। कई दिन वह बस कुछ हिस्सा चबाता रहा। इस बीच हिरण का माँस सड़ गया और वह केवल गिद्धों के खाने लायक रह गया। इस प्रकार मक्खीचूस गीदड़ प्रायः हंसी का पात्र बनता। जब वह बाहर निकलता तो दूसरे जीव उसका मरियल-सा शरीर देखते और कहते "वह देखो, मक्खीचूस जा रहा हैं।

पर वह परवाह न करता। कंजूसों में यह आदत होती ही हैं। कंजूसों की अपने घर में भी खिल्ली उड़ती हैं, पर वह इसे अनसुना कर देते हैं।

उसी वन में एक शिकारी शिकार की तलाश में एक दिन आया। उसने एक सुअर को देखा और निशाना लगाकर तीर छोड़ा। तीर जंगली सुअर की कमर को बींधता हुआ शरीर में घुसा। क्रोधित सुअर शिकारी की ओर दौड़ा और उसने खच से अपने नुकीले दांत शिकारी के पेट में घोंप दिये। शिकारी ओर शिकार दोनों मर गये। तभी वहाँ मक्खीचूस गीदड़ आ निकला। वह खुशी से उछल पड़ा। शिकारी व सुअर के मांस को कम से कम दो महीने चलाना हैं। उसने हिसाब लगाया।

"रोज थोड़ा-थोड़ा खाऊँगा।' वह बोला।

तभी उसकी नजर पास ही पड़े धनुष पर पड़ी। उसने धनुष को सूंघा। धनुष की डोर कोनों पर चमडी की पट्टी से लकड़ी से बँधी थी। उसने सोचा "आज तो इस चमड़ी की पट्टी को खाकर ही काम चलाऊँगा। माँस खर्च नहीं करूँगा। पूरा बचा लूँगा।'

ऐसा सोचकर वह धनुष का कोना मुँह में डाल पट्टी काटने लगा। ज्यों ही पट्टी कटी, डोर छूटी और धनुष की लकड़ी पट से सीधी हो गयी। धनुष का कोना चटाक से गीदड़ के तालू में लगा और उसे चीरता हुआ। उसकी नाक तोड़कर बाहर निकला। मक्खीचूस गीदड़ वहीं मर गया।

सीख : अधिक कंजूसी का परिणाम अच्छा नहीं होता।

बाल-प्रश्नोत्तरी

01. 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' किस वेद से लिया गया है?
(क) ऋग्वेद (ख) यजुर्वेद
(ग) सामवेद (घ) अथर्ववेद

2. महाभारत युद्ध में कुल कितने अक्षौहिणी सेनायें थीं?
(क) सात (ख) ग्यारह
(ग) बाईस (घ) अठारह

03. भगवान श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र की प्राप्ति किससे हुई?
(क) विष्णु (ख) बलराम
(ग) परशुराम (घ) कृपाचार्य

04. दौपदी का जन्म कहाँ हुआ था?
(क) श्रावस्ती (ख) काम्पिल्य
(ग) देवी पाटन (घ) मगध

05. भगवान राम के जन्म हेतु पुत्रेष्टि यज्ञ (पुत्रकामेष्टि) किस नदी के तट पर हुआ था?
(क) सरयू नदी (ख) गोमती नदी
(ग) मनोरमा नदी (घ) सई नदी

06. अन्य की देवी अन्नपूर्णा का जन्म कब हुआ?
(क) कार्तिक शुक्ल दशमी
(ख) चैत्र कृष्ण षष्ठी
(ग) वैशाख शुक्ल तृतीया
(घ) आषाढ़ पूर्णिमा

07. राष्ट्रधर्म प्रकाशन का निदेशक कौन नही रहा है ?
(क) दीनदयाल उपाध्याय
(ख) राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैया'
(ग) अटल बिहारी वाजपेयी
(घ) नानाजी देशमुख

उत्तर : 1.(ख), 2.(घ), 3.(ग), 4(ख), 5.(क), 6.(ख), 7.(ग)

जय-जय प्यारे राष्ट्र निशान

जय-जय प्यारे राष्ट्र निशान
कोटि-कोटि हिन्दू ह्रदयों का
तू ही चिरपूजित भगवान!
जय जय...

चिर-प्रतीक तू देश-भक्ति का
चिर-संस्मारक राष्ट्र-शक्ति का
चिर-प्रेरक तू अनासक्ति का
तेरा है चिर गौरव गान।।1।।

तू स्वातंत्र्य-गीत का गायक
तू ही नवसंस्फूर्ति प्रदायक
तू विदलित जीवों का नायक
अमर-क्रान्ति का तू आह्वान।। 2।।

तेरे चरणों पर हैं शत-शत
मस्तक चढ़ने को प्रति-पल नत,
तेरी रक्षा वीरों का व्रत
तू ही ध्येय है, तू ही ध्यान।। 3।।

वैशाख शुक्ल पूर्णिमा-ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी : विक्रम संवत्-2083

व्रत-पर्व

01 मई	बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख पूर्णिमा, कूर्म जयन्ती, सत्य व्रत
02 मई	नारद जयन्ती
05 मई	अंगारकी चतुर्थी, संकष्टी गणेश चतुर्थी
07 मई	महर्षि कश्यप जयन्ती
09 मई	कालाष्टमी
13 मई	अपरा एकादशी, भद्रकाली जयन्ती
14 मई	प्रदोष व्रत
15 मई	मासिक शिवरात्रि, वृष संक्रान्ति, वट सावित्री व्रत

स्मरणीय तिथियाँ

01 मई (पुण्यतिथि)	प्रफुल्लचंद चाकी
02 मई (जयन्ती)	पुरातत्त्वविद् ब्रजवासी लाल
04 मई (पुण्यतिथि)	किशन महाराज
05 मई (जयन्ती)	मेजर होशियार सिंह
05 मई (पुण्यतिथि)	गणितज्ञ गोरख प्रसाद
08 मई (जयन्ती)	गिरिजा देवी
08 मई (बलिदान दिवस)	चाफेकर बन्धु
09 मई (जयन्ती)	महाराणा प्रताप गोपाल कृष्ण गोखले
09 मई (पुण्यतिथि)	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
10 मई (पुण्यतिथि)	छत्रपति साहू महाराज, पंडित शिवकुमार शर्मा
10 मई (दिवस)	1857 क्रान्ति आन्दोलन दिवस
11 मई (जयन्ती)	नृत्यांगना मृणालिनी साराभाई
11 मई (दिवस)	सोमनाथ प्रतिष्ठा दिवस
14 मई (जयन्ती)	शम्भाजी महाराज
15 मई (जयन्ती)	अल्लूरी सीताराम राजू, महेन्द्रनाथ मुल्ला, सुखदेव
15 मई (पुण्यतिथि)	के. एम. करिअप्पा

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी
निदेशक- उत्थान ज्योतिष एवं अध्यात्म संस्थान

मेष राशि-
नेतृत्व क्षमता एवं तीव्रता में वृद्धि होगी। आन्तरिक डर में वृद्धि। राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों को लाभ होगा। धन सम्बन्धित कार्यों में प्रगति होगी। बुद्धिमता में वृद्धि होगी।

वृषभ राशि-
व्यक्तित्व में निखार आयेगा। विचारों में उन्नति होगी। धन संग्रह में सामान्य अवरोध के साथ आर्थिक गतिविधियों में सुधार होगा। जीवनसाथी से मधुरता बढ़ेगी।

मिथुन राशि-
बौद्धिक क्षमता में विस्तार होगा। आर्थिक एवं व्यापारिक सुधार होगा। क्रोध में वृद्धि होगी। सीने की तकलीफ में वृद्धि होगी। नींद में कमी आयेगी। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। विलासिता पर खर्च बढ़ेगा।

कर्क राशि-
मनोबल एवं धन सम्बन्धित कार्यों में प्रगति होगी। नये व्यापार की शुरुआत हो सकती है। सरकारी तंत्र से लाभ होगा। राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों को विशेष लाभ होगा।

सिंह राशि-
मनोबल उत्तम बना रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी। कलात्मक रुचि में वृद्धि होगी। डिग्री के लिये समय अनुकूल रहेगा।

कन्या राशि-
आर्थिक गतिविधियों में सुधार एवं दूर की यात्रा में खर्च वृद्धि होगी। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। क्रोध में तीव्रता। गृह एवं वाहन पर खर्च बढ़ेगा। दांपत्य जीवन को लेकर तनाव बढ़ेगा।

तुला राशि-
सरकारी तंत्र से लाभ बढ़ेगा। व्यक्तित्व में तीव्रता बढ़ेगी। पेट की आन्तरिक समस्या के कारण तनाव होगा। सन्तान को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। अध्ययन में अवरोध होगा।

वृश्चिक राशि-
साझेदारी के कार्यों से लाभ बढ़ेगा। वाणी व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक प्रगति होगा। पैतृक सम्पत्ति को लेकर तनाव बढ़ेगा। सुख में कमी होगी।

धनु राशि-
सामाजिक दायरे में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। क्रोध में वृद्धि होगी। प्रॉपर्टी से जुड़े कार्य से लाभ होगा। आर्थिक प्रगति होगी। मनोबल में सकारात्मकता रहेगी। घनिष्ठ व्यक्ति से तनाव होगा।

मकर राशि-
पराक्रम, पुरुषार्थ, सामाजिक दायरे में वृद्धि एवं भाई, बहनों, मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। सरकारी तंत्र से विवाद या तनाव बढ़ेगा। संतान पक्ष से सकारात्मकता बढ़ेगी। वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी।

कुम्भ राशि-
जमीन, जायदाद, अचल सम्पत्ति का लाभ प्राप्त होगा। ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र से जुड़े लोगों को लाभ होगा। मानसिक अस्थिरता में वृद्धि होगी। कार्यों में भाग्य का साथ कम प्राप्त होगा।

मीन राशि-
मानसिक द्वंद में वृद्धि होगी। आन्तरिक डर में वृद्धि होगी। परिश्रम पुरुषार्थ में वृद्धि एवं पदोन्नति की स्थिति बनेगी। दूरस्थ यात्रा पर खर्च बढ़ेगा। पारिवारिक कार्यों को लेकर मन में उलझन बढ़ेगा।

विधि-विधान से खोले गये यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम के कपाट